इस्लाम का संक्षिप्त तथा सचित्र परिचय

पूरी किताब या उसकी मुद्रित प्रति ऑनलाइन प्राप्त करने अथवा इस्लाम के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया पधारें :
www.islam-guide.com

इसलाम - हिन्दी (Hindi Language)

फ्रंट कवर फोटो : विश्व भर से आए हुए दस लाख से भी अधिक मुसलमान एक साथ मस्जिद-ए-हराम में नमाज़ अदा करते हुए।
बैक कवर फोटो : मस्जिद-ए-नबवी, मदीना मुनव्वरा।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु तथा बड़ा दयावान है।

इस्लाम का संक्षिप्त तथा सचित्र परिचय

लेखक

आई. ए. इब्राहीम

साधारण संशोधकगण

डा. विलियम (दाऊद) पीची
मीशेल (अब्दुल हकीम) थोमस
टोनी (अब्दुल खलील) सेलवेस्टर
इद्रीस पालमर
जमाल ज़ाराबोज़ो
अली अल-तमीमी

वैज्ञानिक संशोधकगण

प्रोफेसर हेराल्ड स्टीवार्ट कूफी
प्रोफेसर एफ. ए. स्टेट
प्रोफेसर महज़ूब ओ. ताहा
प्रोफेसर अहमद अल्लाम
प्रोफेसर सलमान सुल्तान
एसोसिएट प्रोफेसर एच. ओ. सिंधी

दार-अल-सलाम
होस्टन

इस पुस्तक का वेबसाइट

पूरी किताब या इस्लाम के बारे में अधिक ऑनलाइन जानकारी इस पते पर मूजुद है :

www.islam-guide.com

प्रकाशक : दार अल-सलाम प्रकाशक तथा वितरक, हॉस्टन, टेक्सास, संयुक्त राज्य अमेरिका।

विषयसूची

विषय **पृ. सं.**

अध्याय 3

भूमिका

इस किताब में इस्लाम के बारे में संक्षिप्त वैज्ञानिक तथा साधारण जानकारी प्रस्तुत की गई है। इसमें तीन अध्याय हैं।

पहला अध्याय "इस्लाम की सत्य धर्म होने के कुछ प्रमाण" है। यह अध्याय इस्लाम के बारे में उन सवालों का जवाब प्रस्तुत करता है, जो लोग सामान्य रूप से पूछते हैं। जैसे :

- क्या क़ुरआन सचमुच अल्लाह ही की वाणी है, जो वह्य (प्रकाशना) द्वारा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई?
- क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सचमुच अल्लाह के भेजे हुए पैगम्बर हैं?
- क्या इस्लाम सही मायने में अल्लाह का धर्म है?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए छः प्रकार के प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं।

1. **पवित्र क़ुरआन के वैज्ञानिक चम्तकार:** इसके अंतर्गत कई ऐसे वैज्ञानिक तथ्यों पर चर्चा की गई है, जो आधुनिक युग में सामने आए हैं और जिन्हें क़ुरआन ने चौदह शताब्दी पूर्व ही बयान कर दिया था।

2. **क़ुरआन की यह बड़ी चुनौती कि उसकी सूरतों से मिलती-जुलती कोई एक सूरा ही प्रस्तुत की जाए:** क़ुरआन में सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने तमाम इनसानों को चुनौती दी है कि वे क़ुरआन की सूरतों की जैसी एक सूरा ही प्रस्तुत करके दिखाएँ। लेकिन क़ुरआन को उतरे हुए चौदह सदियाँ गुज़र जाने के बावजूद आज तक कोई इस चुनौती को स्वीकार न कर सका और उसकी सबसे छोटी सूरा, सूरा अल-कौसर जैसी एक सूरह भी प्रस्तुत न कर सका, जिसमें केवल दस शब्द हैं।

3. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आगमन की भविष्यवाणी इंजील में: इसके अंतर्गत इस्लामी पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आगमन के बारे में जो बातें इंजील में कही गई हैं, उनका उल्लेख है।
4. क़ुरआन की ऐसी भविष्यवाणियाँ जो कालान्तर में सच साबित हुईं :क़ुरआन ने कई ऐसी घटनाओं की भविष्यवाणी की थी, जो बाद में घटित भी हुईं। उदाहरण स्वरूप रूमियों का फारसियों पर विजय प्राप्त करने की भविष्यवाणी।
5. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा प्रकट होने वाले चमत्कार : मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा बहुत-सी चमत्कारिक घटनाएँ सामने आई हैं, जिन्हें बहुत-से लोगों ने देखा है।
6. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का सादगी भरा जीवन: इससे स्पषट हो जाता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) झूठे पैग़म्बर नहीं थे, जो सांसारिक लोभ, शक्ति अथवा सामर्थ्य के लिए पैग़म्बरी का दावा करते।

इन छः परकार के प्रमाणों से निम्नालिखित परिणाम निकलते हैं :
- क़ुरआन अक्षरश: अल्लाह की उतारी हुई किताब है।
- मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के सच्चे पैगम्बर हैं।
- इस्लाम अल्लाह का सत्य धर्म है।

किसी भी धर्म की सत्यता एवं असत्यता को जानने के लिए केवल भावना और परम्परा पर विश्वास नहीं किया जा सकता। इसके लिए विवेक, बुद्धि एवं तर्कों का प्रयोग ज़रुरी है। जब अल्लाह ने पैगम्बरों को भेजा तो विभिन्न प्रकार की चमत्कारिक शक्तियों तथा प्रमाणों से उनकी मदद की, जिनसे स्पष्ट हो जाए कि वे सचमुच अल्लाह की ओर से भेजे हुए रसूल हैं और उनके द्वारा लाया गया धर्म सत्य है।

दूसरे अध्याय "इस्लाम के कुछ लाभ" में इस्लाम के उन लाभों का वर्णन है, जिन्हें वह लोगों के सामने रखता है। जैसे :

क- अनंत स्वर्ग की प्राप्ति

ख- नरक की यातनाओं से मुक्ति

ग- वास्तविक आनंद तथा आंतरिक शांति की प्राप्ति

घ- पूर्व के सभी पापों की क्षमा

तीसरे अध्याय "इस्लाम के संबंध में सामान्य जानकारियाँ" के अंतर्गत इस्लाम के बारे में संक्षिप्त जानकारियाँ प्रस्तुत करने के साथ-साथ उससे संबंधित कुछ ग़लतफहमियों को दूर किया गया है एवं सामान्य रुप से पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर दिया गया है। उदाहरणस्वरूप :
- आतंकवाद के बारे में इस्लाम का दृष्टिकोण।
- इस्लाम में नारी का स्थान

अध्याय 1

इस्लाम के सत्य धर्म होने के कुछ प्रमाण

अल्लाह ने अपने अंतिम पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत सारे चमत्कार और बहुत-से सबूत प्रदान किए थे, जिनसे सिद्ध होता है कि वह एक सच्चे पैग़म्बर थे और उन्हें अल्लाह ने भेजा था। इसी तरह उसने अपनी अंतिम पुस्तक पवित्र क़ुरआन के अंदर भी बहुत सारे चमत्कार रख दिए हैं, जिसने सिद्ध होता है कि वह अक्षरशः अल्लाह की उतारी हुई किताब है और उसे लिखने में किसी इंसान का कोई हाथ नहीं था। यहाँ इनमें से कुछ प्रमाणों की चर्चा की गई है :

(1) पवित्र क़ुरआन के वैज्ञानिक चमत्कार

क़ुरआन अल्लाह की वाणी है, जिसे उसने अपने नबी मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अपने फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) के ज़रिए उतारा है। उसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कण्ठस्थ करने के बाद अपने साथियों को लिखवाया और फिर उन्होंने उसे कण्ठस्थ किया, लिखा और अल्लाह के नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पढ़कर सुनाया। इसके आतिरिक्त, अल्लाह के नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को हर साल एक बार और अपने जीवन के अंतिम साल दो बार, उसे पढ़कर सुनाया। जिस समय से क़ुरआन उतारा गया है, उस समय से आज तक अनगिनत मुसलमानों ने शब्द-ब-शब्द उसे कण्ठस्थ किया है। कुछ लोगों ने तो दस साल की अल्प आयु में ही पूरा क़ुरआन कण्ठस्थ कर लिया। सदियाँ गुज़र जाने के बावजूद आज तक क़ुरआन का एक भी शब्द नहीं बदला है।

पवित्र क़ुरआन

क़ुरआन जो चौदह शताब्दी पूर्व अवतरित हुआ था, उसने कई ऐसे तथ्यों को बयान किया है, जिनकी खोज हाल ही में वैज्ञानिकों द्वारा हुई हैa। इससे निस्संदेह यह प्रमाणित होता है कि क़ुरआन अल्लाह की

वाणी है, जिसे उसने पैग़म्बर मुहम्मद पर उतारा था और यह कि यह मुहम्मद या किसी दूसरे इंसान की लिखी हुई किताब नहीं है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि वास्तव में मुहम्मद अल्लाह के भेजे हुए पैग़म्बर हैं। यह समझ से परे है कि अत्याधुनिक उपकरणों एवं जटिल वैज्ञानिक तरीकों द्वारा आज जिन तथ्यों की खोज हुई है aया जिन्हें साबित किया गया है, उन्हें कोई चौदह सौ साल पहले ही जान ले। इस तरह के तथ्यों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

(क) कुरआन और मानव भ्रूण विकास

पवित्र कुरआन में अल्लाह ने मानव भ्रूण विकास के विभिन्न चरणों के विषय में कहा है :

﴾निसंदेह हमने मनुष्य की रचना खन्खनाती मिट्टी के सार से की है, और फिर हमने उसे वीर्य बनाकर एक सुरक्षित् स्थान में रख दिया, फिर वीर्य को हमने जमा हुआ रक्त बना दिया, फिर उस रक्त के लोथड़े को मांस (गोस्त) का टुकडा बना दिया, फिर मांस के टुकडे में अस्थियाँ बनायी, फिर अस्थियों को मांस पहना दिया, फिर एक अन्य रुप में उसे पैदा कर दिया। शुभ है वह अल्लाह जो सबसे अच्छी उत्पति करने वाला है"।...﴿[1] (कुरआन 23: 12-13-14)

इन आयतों में आए हुए अरबी शब्द "अलाकह" के तीन अर्थ हैं (1) जोंक (2) लटकी हुई वस्तु (3) जमा हुआ रक्त।

"अलाकह" की अवस्था में भ्रूण की तुलना जोंक से करने से हमें इन दोनों में सामानता दिखती है,[2] । उदाहरणस्वरूप दोनों की आकृति में समानता होती है (जो कि चित्र 1 से स्पष्ट है)। इसी तरह इस अवस्था में भ्रूण पोषकतत्व माँ के रक्त से प्राप्त करता है, बिलकुल जोंक के समान, जो अपना भोजन दूसरों के रक्त से प्राप्त करता हैं।.[3]

"अलाक़ह" का तीसरा अर्थ रक्त पिंड है। "अलाक़ह" की अवस्था में भ्रूण का बाहरी स्वरूप और उसकी झिल्ली एक रक्त पिंड के समान लगती है। इसका कारण यह है कि इस चरण में भ्रूण में विशाल मात्रा

---

(1) दो उद्धरण चिह्नों के बीच लिखा हुआ यह भाग कुरआन नहीं, बल्कि कुरआन का अनुवाद है, क्योंकि कुरआन अरबी भाषा में है।

(2) ""द डेप्लपिंग ह्यूमन", मुर, कीथ एल. और टी. वी. एन. परसुड, 1993, 5th. संस्करण, पृ. सं. 8।

(3) "मानव विकास जैसा कि कुरान और सुन्नत में वर्णित है "मुर और परसुड, पृ. सं. 36।
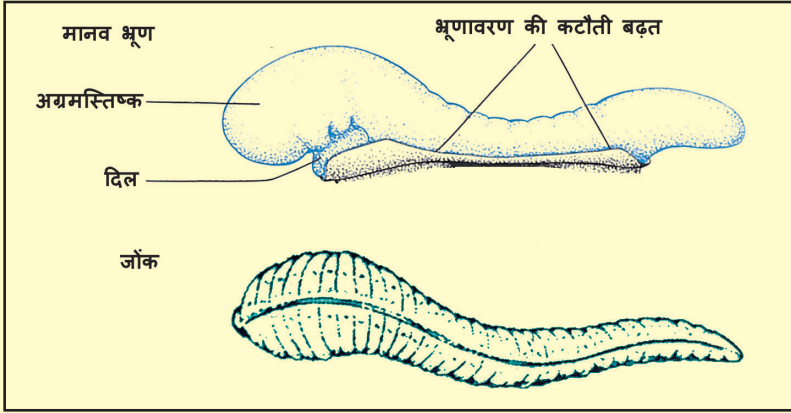
चित्र 1:जोंक और मानव-भ्रूण के "अलाक़ा" की अवस्था की आकृतियों में समानता। (जोंक का चित्र "ह्यूमन डेवलपमेंट जैसा कि क़ुरआन व सुन्नत में वर्णन है"..., मुर एवं अन्य पृ. सं. 37 से लिया गया है। इसे हिकमान तथा अन्य की किताब "Integrated Principles of Zoology" से मोडीफाइ किया गया है। मान-वभ्रूण का चित्र "ह्यूमन डेवलपमेंट" मुर एवं परसुड, पांचवाँ संस्करण, पृ. सं. 73 से लिया गया है।)

चित्र 2: इस चित्र में मानव-भ्रूण को "अलाक़ह" की अवस्था में माँ के गर्भाशय में लटकी हुई हालत में देखा जा सकता है। ("ह्यूमन डेवलपमेंट" मुर ऐंड परसुड, पाँचवाँ संस्करण पृ. सं. 66)
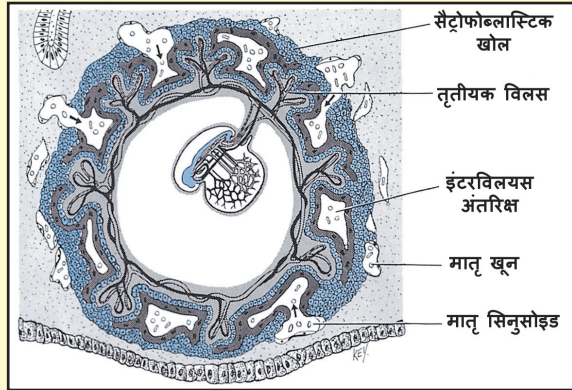
चित्र 3: इस चित्र में भ्रूण (बी द्वारा चिह्नित) को "अलाक़ह" की अवस्था में (जब उसकी आयु लगभग 15 दिन हो) माँ के गर्भाशय में लटकी हुई अवस्था में देखा जा सकता है। भ्रूण की वास्तविक लम्बाई 0.6 मी. मी. है। (दा डेप्लपिंग ह्युमन" लेखक मुर, तीसरा संस्करण, पृ. सं. 66) "हिस्टोलोजी" लीसोन एंड लीसोन से लिया गया है।
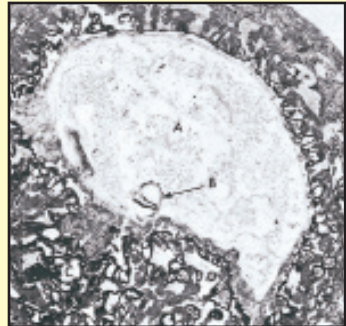
में रक्त उपस्थित रहता है[1]। (फोटो 4 देखें।) साथ ही, इस अवस्था में रक्त भ्रूण के अंदर तीसरे सप्ताह तक प्रवाहित नहीं होता [2]। अत: इस अवस्था में भ्रूण रक्त पिंड के समान लगता है।

चित्र 4:“अलाक़ह” की हालत में भ्रूण की रक्त संचालन प्रक्रियाऐं। “अलाकह” की स्थिति में भ्रूण का बाहरी स्वरूप और उसकी झिल्ली एक रक्त पिंड के समान लगती है। इसका कारण इस चरण में भ्रूण के अंदर विशाल मात्रा में रक्त का उपस्थित रहना है। ("द डेवलपिंग ह्यूमन" मूर, पाँचवाँ संस्करण, पृ. सं. 65)
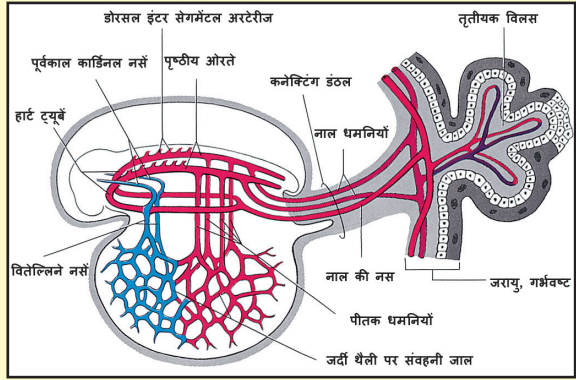
इस तरह देखा जाए तो "अलाकह" शब्द के तीनों अर्थ, भ्रूण की उस अवस्था की विशेषताओं से मेल खा जाते हैं, जब वह “अलाक़ह” के मर्हले में होता है।

क़ुरआन की उक्त आयत में “अलाक़ह” के बाद “मुज़ग़ह” की अवस्था का ज़िक्र हुआ है। अरबी शब्द “मुज़गह” का अर्थ "चबाया हुआ तत्व" है। अगर आप कोई चूइंग गम लेकर उसे अपने मुँह में चबाने के बाद उसकी तुलना “मुज़गह” की अवस्था में रहने वाले भ्रूण से करेंगे, तो यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि “मुज़ग़ह” की अवस्था में रहने वाला भ्रूण चबाई हुई वस्तु के समान लगता है। इसका कारण यह है कि भ्रूण की पीठ की संरचना एक हद तक कुछ ऐसी दिखाई देती है, जैसे किसी चबाई हुई वस्तु में दाँत के निशान पड़े हुए हों[3]। (देखें चित्र सं. 5 तथा 6।)

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इन चीजों a के बारे में 1400 साल पहले कैसे जान गए, जबकि वैज्ञानिकों ने हाल ही में उन्नत यंत्रों एवं शक्तिशाली माइक्रोस्कोप के द्वारा इन चीजों की खोज की है, जो उस समय मौजूद नहीं थे। हाम्म (Hamm) और लियुवेंडहोक (Leeuwendhock) वो पहले वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के 1000 साल बाद 1677 में शुक्राणु (Spermatozoan) का पता लगाया था। लेकिन इन दोनों वैज्ञानिकों ने गलती से यह मान लिया था कि शुक्राणु कोशिका के अंदर एक छोटा इंसान मौजूद होता है, जो स्त्री के गर्भाशय में जाने के बाद बड़ा होता है[4]।

---

(1) "मानव विकास जैसा कि कुरान और सुन्नत में वर्णित है "मुर और परसुड, पृ. सं. 37 -38।

(2) "द डेप्लपिंग ह्यूमन", मुर, कीथ एल. और टी. वी. एन. परसुड, 1993, 5th संस्करण, पृ. सं. 65 और 8 और 9।.

(3) "द डेप्लपिंग ह्यूमन", मुर, कीथ एल. और टी. वी. एन. परसुड, 1993, 5th संस्करण, पृ. सं. 65 और 8 और 9। .

(4) "द डेप्लपिंग ह्यूमन", मुर, कीथ एल. और टी. वी. एन. परसुड, 1993, 5th संस्करण, पृ. सं. 65 और 8 और 9।

चित्र 5:"मुज़ग़ह" की अवस्था में एक भ्रूण की तस्वीर (जबकि वह 28 दिन का हो)। इस अवस्था में भ्रूण चबाई हुई वस्तु के समान लगता है, क्योंकि भ्रूण की पीठ पर कुछ हद तक एक चबाएँ हुए पदार्थ में दाँत के निशान जैसे निशान दिखते हैं। इस अवस्था में भ्रूण का वास्तविक आकार 4 मि. मी. है। ("द डेवलपिंग ह्यूमन" मूर एवं परसुड, पाँचवाँ संस्करण, पृ. सं. 82, प्रोफेसर हिडे ओनिशिमुरा क्योटो विश्वविद्यालय, क्योटो, जापान।)
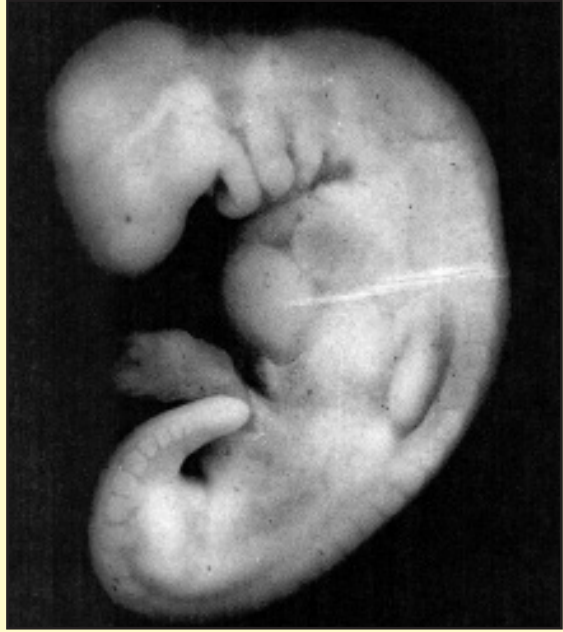
चित्र 6: जब हम "मुज़ग़ह" चरण में भ्रूण की तुलना चबाए हुए चूइंग गम से करते हैं, तो दोनों के बीच समानता पाते हैं।

(क) "मुज़ग़ह" चरण में भ्रूण का एक चित्र। भ्रूण की पीठ पर यहाँ हम दाँतों के निशान देख सकते हैं। ("द डेवलपिंग ह्यूमन मूर एवं परसुड", पाँचवाँ संस्करण, पृ. 79)

(ख) चबाए हुए चूइंग गम का एक टुकड़ा।
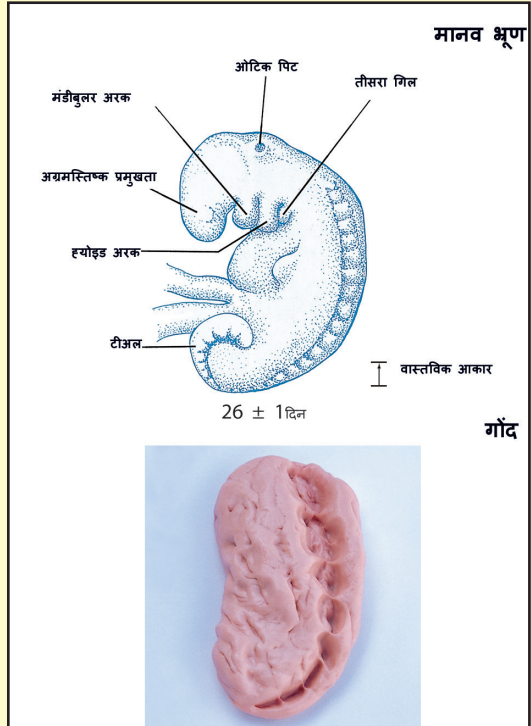
प्रोफेसर कीथ एल. मुर (Keith L. Moore) शरीर रचना और भ्रूण विज्ञान के मैदान में दुनिया के प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक एवं "The Developning Human" नामी पुस्तक के लेखक हैं, जिसका अनुवाद आठ भाषाओं में हो चुका है। यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संदर्भ की हैसियत रखती है, जिसे अमरीका की एक विशेष समिति ने किसी एक लेखक द्वारा लिखी गई सबसे उत्तम पुस्तक घोषित किया है।

डॉक्टर कीथ मुर टोरन्टो विश्वविधालय, कनाडा में शारीरिक विज्ञान तथा शुक्राणु कोषिका विज्ञान के प्रोफेसर हैं। वहाँ वह चिकित्सा संकाय में मूलभूत विज्ञान के सहायक एसोसिएट डीन एवं आठ साल तक शारीरिक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। 1984 में उन्होंने शारीरिक विज्ञान के क्षेत्र में कनाडा में कनाडियन एसोशियसन ऑफ अनाटोमिस्टस (Canadian Association of Anatomists) की तरफ से दिए जाने वाले सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार जे. सी. बी. ग्रांट अवार्ड (J.C.B. Grant Award) प्राप्त किया था। वह कनाडियन एंड अमेरीकन एसोशियसन ऑफ अनाटोमिस्टस और काउंसिल ऑफ द युनियन ऑफ बायलोजीकल साइंसेज़ जैसी बहुत सारी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के निदेशक भी रह चुके हैं।

दम्माम, सऊदी अरब में सतावें चिकित्सा सम्मेलन 1981 के दौरान प्रध्यापक मुर ने कहा था : “मानव विकास के बारे में कुरआन के कथनों को स्पष्ट करना मेरे लिए बहुत खुशी का कारण रहा है। मैं इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट हूँ कि यह कथन अवश्य ही अल्लाह की तरफ से मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आए हैंa। क्योंकि लगभग इस तरह के तमाम तथ्यों की खोज बहुत सदियों बाद हाल ही में हुई है, जो इस बात को सिद्ध करता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ईश्वर के दूत थे[(1)]।”

फलस्वरूप प्रध्यापक मुर से यह प्रश्न किया गया : "क्या इसका यह अर्थ है कि आपको विश्वास है कि कुरआन अल्लाह के शब्द हैं?" उन्होंने कहा : “मुझे इस बात को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं है [(2)]।”

चूँकि मानव विकास के समय लगातार हो रहे बदलाव के कारण मानव भ्रूण के चरणों को तय करना मुश्किल है, इसलिए कुरआन एवं सुन्नत (अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ कहा एवं किया तथा जिसे स्वकृति दी है) के मुताबिक नया वर्गीकरण प्रणाली विकसित किया जाना चाहिए। यह प्रस्तावित प्रणाली सरल, समावेशी और मौजूदा भ्रूण विज्ञान के अनुकूल है। पिछले चार सालों में कुरआन

---

(1) "यही सच है (This is the Truth)" (वीडियो टेप) यह टेप किताब के अंत में दिए गए पते से प्राप्त किया जा सकता है।

(2) “यही सच है” वीडियो टेप।

एवं सुन्नत के गहरे अध्ययन ने मानव भ्रूण वर्गीकरण का एक सिस्टम सामने लाया है। और यह बहुत आश्चर्यजनक है, क्योंकि यह सातवीं शताब्दी से संबंधित है।

हालाँकि, अरस्तो (Aristotle) जिसने भ्रूण विज्ञान की स्थापना की थी, उन्होंने चौथी सदी ईसा पूर्व मुर्गी के अंडे पर अपने अध्ययन के नतीजे में यह बताया था कि चूज़े का भ्रूण विकास कई चरणों में होता है। पर उन्होंने इन चरणों का कोई विवरण नहीं दिया था। भ्रूण विज्ञान के इतिहास में मानव भ्रूण के वर्गीकरण एवं चरणों के बारे में बीसवीं शताब्दी से पहले बहुत कम जानकारी थी। इसलिए सातवीं शताब्दी में क़ुरआन में मानव भ्रूण के विवरण को वैज्ञानिक जानकारी पर आधारित नहीं कहा जा सकता है। एकमात्र लॉजीकल निष्कर्ष यह है कि इन बातों को अल्लाह ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बताया है। क्योंकि उनके पास इस संबंध में कोई तफसील नहीं थी, क्योंकि वह किसी भी तरह के वैज्ञानिक प्रशिक्षण से वंचित एक अनपढ़ आदमी थे [1]।

(ख) क़ुरआन में पर्वत का वर्णन

"Earth" शीर्षक नामी पुस्तक विश्व की अधिकतर विश्वविधालयों में मूल अभिदेश पाठ्यपुस्तक है। इसके दो लेखकों में से एक प्राध्यापक एमीरीट्स फ्रांक प्रेस (Frank Press) हैं। वह भूतपूर्व अमीरीकी राष्ट्रपति जिम्मी कार्टर के वैज्ञानिक सलाहकार थे और 12 साल तक राष्ट्रीय विज्ञान एकेडमी (National Academy of Science) वाशिंगटन के अध्यक्ष थे। इस पुस्तक के अनुसार पर्वत के नीचे जड़ें होती हैं[2]। यह जड़ें जमीन में अंदर तक गड़ी होती हैं। अतः पर्वत का आकार खूँटी के समान होता है।

क़ुरआन ने पर्वत का वर्णन ऐसे ही किया है। अल्लाह ने क़ुरआन में कहा है:

﴾क्या हमने जमीन को समतल नहीं बनाया है और पर्वत को खूँटी?﴿ (क़ुरआन , 78:67)

आधुनिक भूविज्ञान ने प्रमाणित किया है कि पर्वत की गहरी जड़ें जमीन के अंदर तक गड़ी हुई हैं (देखें चित्र 9)। और यह जड़ें पहाड़ की

(1) "यही सच है" वीडियो टेप। देखें संदर्भ सं. 2, पृ. सं. 10।
(2) "Earth" Frank Press और Raymod Siever, पृ. सं. 435 और "Earth Science" Tarbuck तथा Lutgens पृ. सं. 157।.

चित्र 7: पहाड़ों की जमीन की सतह के नीचे गहरी जड़ें हैं। ("Earth" लेखक : प्रेस तथा सीवर, पृ. सं. 413.)
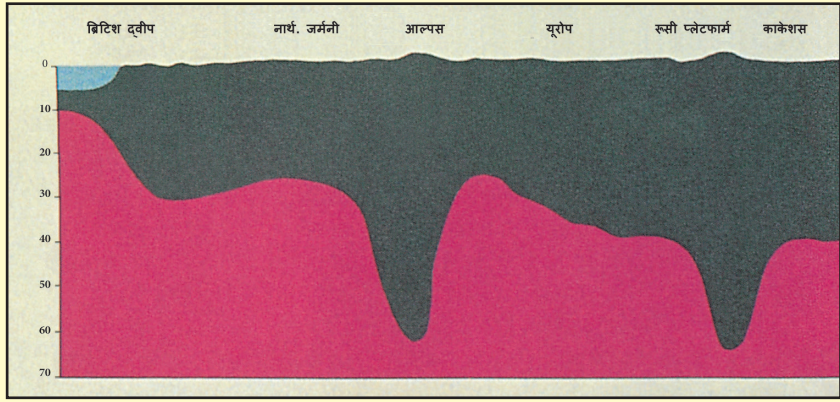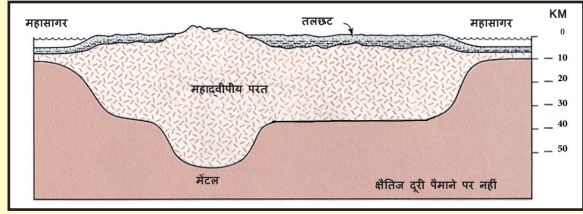
चित्र 8: योजनाबद्ध खंड। पहाड़ों की खूँटी की तरह जमीन में गहरी जड़ें हैं। (अनाटोमी ऑफ द अर्थ, लेखक : Cailleux, Andre, पृ. 220)।|
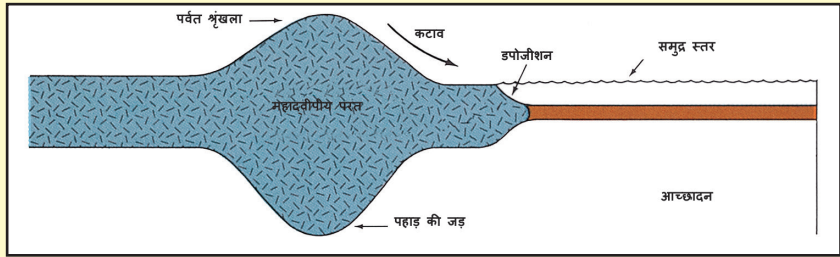
चित्र 9: एक और चित्र के अनुसार किस तरह पहाड़ उनकी जड़ें गहरी होने के कारण आकार में खूँटी की तरह लग रहे हैं। (पृथ्वी विज्ञान, लेखक : Tarbuck तथा Lutgens, पृ. 158) ।

ऊँचाई से कई गुना अंदर धँसी हुई हैं[1]। अतः पर्वत का वर्णन करने के लिए खूँटी सबसे उचित शब्द है। क्योंकि खूँटी का बड़ा भाग भूमि के नीचे गुप्त होता है।

---

(1) "The zoological concept of the mountain in the Qura'n" Z. R. El-Naggar, पृ. सं. 5, 44 -55।.

विज्ञान का इतिहास हमें बताता है कि पर्वत की गहरी जड़ें होने का मत 1865 में खगोल विज्ञानी सर जॉर्ज ऐरी (Sir Goerge Airy) के द्वारा प्रस्तुत किया गया[1]।

पर्वत पृथ्वी के पटल को स्थिर करने में अहम भुमिका निभाते हैं[2] तथा जमीन के कंपन को रोकते हैं। अल्लाह ने क़ुरआन में कहा है :

﴾और उसने पर्वत को जमीन में गाड़ दिया, ताकि यह तुम्हारे साथ न हिले।﴿ (क़ुरआन , 16:15)

इसी तरह प्लेट टेक्टोनिक का आधुनिक सिद्धांत कहता है कि पर्वत पृथ्वी को स्थिर बनाते हैं। पर्वतों के पृथ्वी को स्थिर बनाने की थ्योरी को 1960 के दशक के आखिरी सालों में परिचित कराया गया [3]।

क्या नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जमाने में कोई पर्वत का सही आकार जानता था ?

क्या कोई वैज्ञानिक के समान यह सोच सकता था कि उसके सामने खड़े ठोस भारी पर्वत असलियत में पृथ्वी के अन्दर तक गड़े हुए हैं और उनकी जड़ें भी हैं? आधुनिक भुविज्ञान ने क़ुरआन की आयतों की पुष्टि की है।
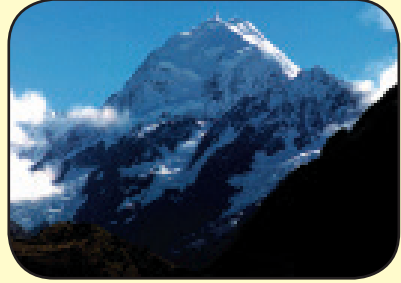
(1) "Earth" प्रेस और रेमंड सिवर, पृ. सं. 435, और " The zoological concept of the mountain in the Qura'n" Z. R. El-Naggar, पृ. सं. 5।

(2) "द ज्युलोजीकल कोंसेप्ट आफ दी माउंटेन इन द क़ुरआन" अल-नग्गर,पृ.सं.44- 45 और 5.

(3) द ज्युलोजीकल कोंसेप्ट आफ दी माउंटेन इन द क़ुरआन" अल-नग्गर,पृ.सं.44 -45 और 5.

(ग) ब्रम्हाण्ड की उत्पति कुरआन के आलोक में

आधुनिक ब्रह्माण्ड विज्ञान, अवलोकन और सैद्धांतिक रुप से यह स्पष्ट करता है aकि एक समय में यह ब्रम्हाण्ड धुँवा का बादल था [(1)]। (एक बहुत ही अपारदर्शी घना एवं गर्म धुँवादार संयोजन)। यह आधुनिक ब्रह्माण्ड विज्ञान का एक अविवादित सिद्धान्त है। वैज्ञानिक उन धुएँ के अवशेषों से नए तारों को बनते देख सकते हैं। (देखें चीत्र 10 और 11)

जैसे यह ब्रम्हाण्ड धुआँ था, वैसे ही रात में दिखने वाले चमकते सितारे भी धुएँ थे। अल्लाह ने क़ुरआन में कहा है :

﴾फिर वह आसमान की ओर आकर्षित हुआ, जो कि धुआँ था ....﴿ (क़ुरआन, 41:11)

चूँकि पृथ्वी और उससे ऊपर मौजूद आकाश (सूर्य, चन्द्रमा, तारे, ग्रह, आकाश गंगा इत्यादि) सब इसी धुएँ से बने हैं, इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पृथ्वी और आकाश एक ही तत्व थे और आपस में जुड़े हुए थे। फिर इस आपस में मिले हुए धुएँ से यह अस्तित्व में आए और अलग हो गए। अल्लाह ने कुरआन में कहा है :

﴾क्या वह लोग, जो विश्वास नहीं करते, यह नहीं जानते कि आकाश और पृथ्वी एक ही तत्व थे, फिर उन्हें हमने अलग किया﴿ (क़ुरआन, 21:30)

डॉक्टर अल्फ्रेड क्रोनर (Alfred Kroner) दुनिया के एक प्रसिद्ध भूवैज्ञानिक हैं। वह भूविज्ञान के प्राध्यापक और भुविज्ञान विभाग, भूविज्ञान संस्थान, जोहांस गटबर्ग विश्वविध्यालय, मेन्ज़, जर्मनी के अध्यक्ष हैं। उन्होनें कहा है : "यह सोचते हुए कि कहाँ से मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आए हैं .... मैं सोचता हूँ कि यह असम्भव है कि वह इन चीजों (जैसे ब्रह्माण्ड का आरंभ आदि) की जानकारी रखते थे, क्योंकि वैज्ञानिकों ने इनकी जानकारी हाल के वर्षों में बड़े पैचीदा तथा विकसित उपकरणों के माध्यम से हासिल की है [(2)]।" साथ ही उन्होंने कहा : "चौदह सौ साल पहले जिसे नाभिकीय अथवा भौतिक ज्ञान नहीं था, वह यह केवल अपनी बुद्धि से नहीं जान सकता कि पृथ्वी और आकाश एक ही वस्तु से बने हैं[(3)]।"

---

(1) "The First Three Minutes, a Modern View of the Origin of the UniVerse" 5th ed. ऐगलवु, पृ. सं. 94- 105।

(2) “This is the Truth” (वीडियो टेप)

(3) “This is the Truth” (वीडियो टेप)

चित्र 10: धूल और गैस के बादल (Nebula), जो इस ब्रहमाण्ड की उत्पत्ति का मूल तत्व यानी धुआँ के अवशेष हैं, से एक सितारा जन्म लेते हुए। (द स्पेस एटलस, लेखक : Heather और Henbest, पृ. 50)

चित्र 11: लैगून नेबुला, गैस और धूल का बादल है, जिसका व्यास लगभग 60 प्रकाश वर्ष है। यह हाल के दिनों में पैदा होने वाले उच्च तापमान वाले विकिरण से उत्साहित है। (Horizons, Exploring the Universe, लेखक : Belmont)

(घ) कुरआन तथा मानव मस्तिष्क

अल्लाह ने कुरआन में एक दुष्ट अविश्वासी, जिसने मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) को काबा में प्रार्थना करने से रोकने की कोशिश की थी, के बारे में कहा है :

﴾अगर वह नहीं रुक्ता तो हम उसे पेशानी के बल पकड़कर घसीटते, झूठी और अपराधी पेशानी।﴿ (कुरआन , 96:15- 16)

प्रश्न उठता है कि क्यों कुरआन ने सिर के आगे के भाग को झूठा और अपराधी कहा है? कुरआन ने व्यक्ति को झूठा और अपराधी क्यों नही कहा है? माथा और झूठ तथा अपराध के बीच में क्या संबंध हैं?

जब हम पेशानी की ओर से खोपड़ी के भीतरी भाग पर ग़ौर करेंगे, तो हमें वहाँ एक विशेष क्षेत्र मिलेगा (देखें चित्र स. 12)। अब देखते हैं कि शरीर कार्य विज्ञान के जानकार इस क्षेत्र के कार्य के बारे में क्या कहते हैं? "Essential of Physiology and Anatomy" नामी पुस्तक इस क्षेत्र के बारे में कहती है : "प्रेरणा, योजना एवं आरंभिक गतिविधियों के कार्य इसी हिस्से में होते हैं। यह एसोसिएशन कोर्टेक्स का इलाका है..."(1) । पुस्तक आगे कहती है : "गतिविधि में भागीदारी से इसके संबंध होने के साथ-साथ अगला हिस्सा हिंसा एवं आक्रमकता का केंद्र भी माना जाता है....।"(2)

इस तरह मस्तिष्क का अगला हिस्सा योजना बनाने, प्रेरित करने एवं अच्छे या बुरे काम शुरू करने का जिम्मेदार है। इसी तरह झूठ या सच बोलने के लिए भी यह जिम्मेदार है। इसलिए क़ुरआन का इस हिस्से को झूठे एवं अपराधी कहना बिल्कुल सही है।.

प्राध्यापक कीथ एल. मुर के अनुसार वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के अगले भाग के कार्य की खोज पिछले साठ सालों में की है(3)।.

---

(1) "Assentials of Anatomy and Physiology", Seeley, Rod R. Trent D. Stephens and Philip Tate, पृ. सं. 211 तथा " The Human Nervous System, Introduction and Review ", Noback, Charles R.N.L. Strominger and R.J. Demarest. पृ. सं. 410- 411, 211।

(2) "Assentials of Anatomy and Physiology", Seeley, Rod R. Trent D. Stephens and Philip Tate, पृ. सं. 211 तथा " The Human Nervous System, Introduction and Review ", Noback, Charles R.N.L. Strominger and R.J. Demarest. पृ. सं. 410- 411, 211।.

(3) "अल-एजाज़ अल-इलमी फ़ी अल-नासियu" मूर व अन्य, पृ. सं. 41।
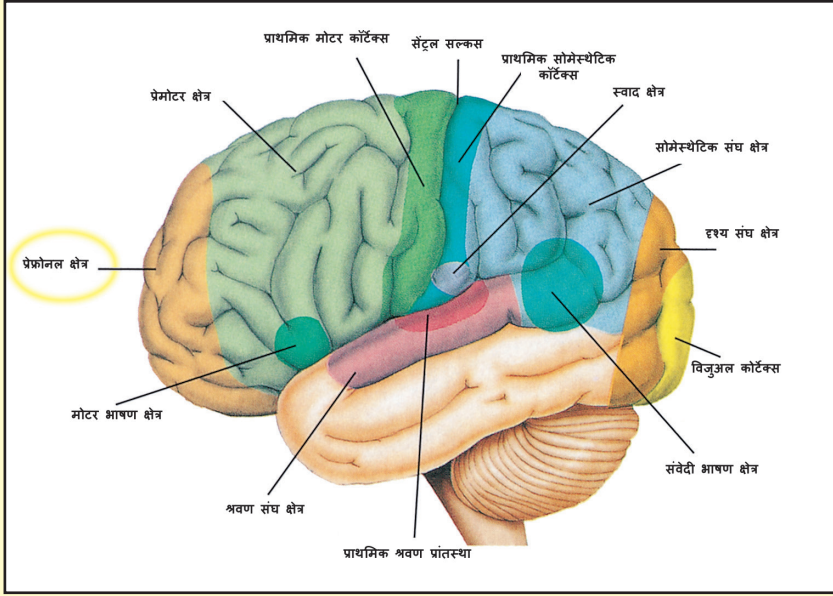
चित्र 12: मस्तिष्क के आवरण के अंदर का क्रियाशील क्षेत्र। प्रीफ़्रंटल एरिया मस्तिष्क के आवरण के अंदर, उसके अगले भाग में स्थित है। (Essential of Anatomy & physiology, Seeley and others, पृ. 210)

(ड़) कुरआन तथा समुद्र एवं नदियाँ

आधुनिक विज्ञान ने पता लगाया है कि जिस जगह दो विभिन्न समुद्र मिलते हैं, तो उनके मध्य एक अवरोध होता है। यह अवरोध दोनों समुद्रों को इस तरह बाँटता है कि हर समुद्र का अपना तापमान, खारापन और सघनता सुरक्षित रहे [1] । उदहारण के लिए भूमध्य-सागर का जल अटलांटिक महासागर के जल की तुलना में ज्यादा गर्म, खारा और कम सघन होता है। जब भूमध्य-सागर का जल जिब्राल्टर के रास्ते अटलांटिक में प्रवेश करता है तो वह अपने गर्म, खारापन और कम सघन विशेषता के साथ अटलांटिक में कई सौ किलोमिटर और लगभग 1000 मीटर की गहराई में चलता रहता है। यद्यपि इन समुद्रों में बड़ी-बड़ी लहरें, शक्तिशाली धाराएँ एवं ज्वार भाटा होते हैं, फिर भी इनके जल न आपस में मिलते हैं और न ही अवरोध को पार करते हैं[2] । (चित्र 13 देखिए) .

(1) "Principles of Oceanography", डेविस पृ. सं. 92- 93।
(2) "Principles of Oceanography", डेविस पृ. सं. 92 -93।
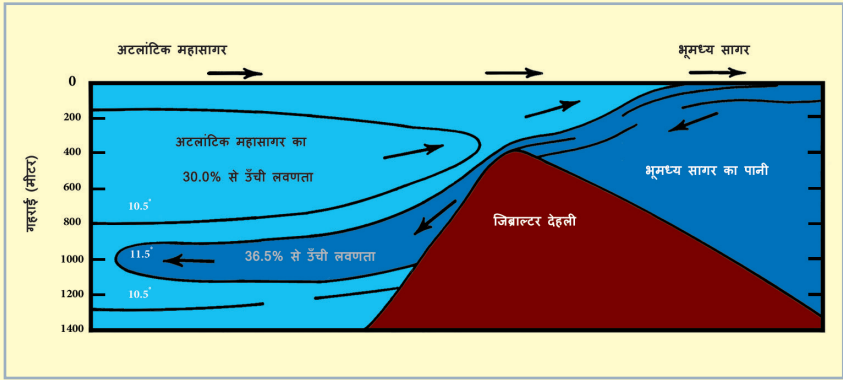
चित्र 13: भूमध्य-सागर का जल जिब्राल्टर सिल के रास्ते अटलांटिक में अपने गर्म, नमकीनी और कम सघनता वाली विशेषताओं के साथ प्रवेश करते हुए, अवरोध के कारण जो दोनों के पानी को अलग करता है। तापमान डिग्री (°C) सेल्सियस में है। (समुद्र भूविज्ञान, लेखक : Kuenen, पृ. 43> कुछ मामूली वृद्धि के साथ।)

पवित्र क़ुरआन ने बताया है कि दो समुद्र जब मिलते हैं, तो उनके बीच एक अवरोध होता है, जिसे वे पार नहीं करते। अल्लाह ने कहा है :

﴾उसने दो सागर बहा दिए, जिनका संगम होता है। उन दोनों के बीच एक आड़ है, वह एक-दूसरे से मिल नहीं सकते।﴿ (क़ुरआन, 55:19- 20)

लेकिन क़ुरआन जब निर्मल और खारे जल के बीच अवरोध की बात करता है, तो अवरोध के साथ-साथ एक मज़बूत रुकावट की भी बात कहता है। अल्लाह ने कहा है :

﴾वही है, जिसने दो सागरों को मिला दिया। यह मीठा रुचिकर है और वह नमकीन खारा और उसने दोनों के बीच एक पर्दा एवं रोक बना दिया।﴿ (क़ुरआन , 25:53)

कोई यह प्रश्न कर सकता है कि क़ुरआन जब निर्मल और खारे जल के बीच के अवरोध की बात करता है, तो रुकावट की बात क्यों करता है, जबकि दो समुद्रों के पानी के अलग रहने का ज़िक्र करते समय उसकी बात नहीं करता?

तो उसका उत्तर यह है कि आधुनिक विज्ञान ने पता लगाया है कि मुहाना (जहाँ निर्मल एवं खारा जल मिलता है) की दशा उन स्थलों से अलग है, जहाँ दो समुद्र मिलते हैं। इस बात का पता किया गया है कि मुहाना जहाँ निर्मल और खारे जल मिलते हैं, उसको “Pycnocline Area” कहा जाता है, जहाँ ज्यादा सघन और अनिरंतरता दोनों सतह को अलग करता है[1] । यह विभाजन (अलगाव जोन) का पानी निर्मल और खारे जल से अलग ही खारापन रखता है[2]। (देखें चित्र सं. 14).
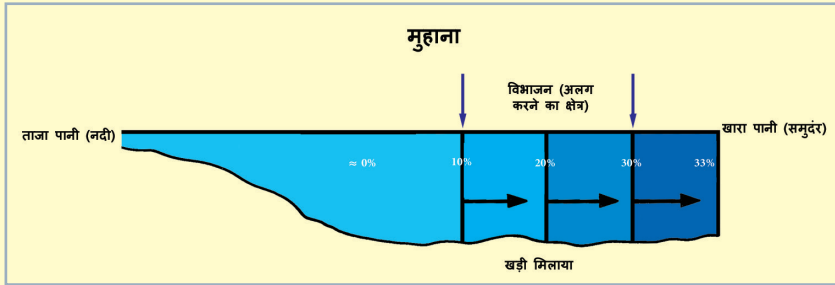
चित्र 14: एक नदी के मुहाने में अनुदैर्ध्य खंड खारापन दिखा रहा है (प्रति हजार भागों‰)। हम यहाँ ताजा और नमकीन पानी के बीच विभाजन (जुदाई का क्षेत्र) देख सकते हैं। “Introductory Oceonography”, लेखक : thurman, पृ. 301। मामूली वृद्धि के साथ)

इस जानकारी की खोज हाल ही में तापमान, खारेपन, घनत्व, ऑक्सिजन के घुलाव को मापने के आधुनिक उपकरणों के द्वारा हुई है। इंसान की नज़र दो मिलते समुद्रों में अन्तर नहीं देख सकती। दोनों समुद्र एक समान लगते हैं। इसी तरह मानव दृष्टि मुहाना में जल के तीन प्रकार यानी मीठे जल, खारे जल और अवरोधक चल का विभाजन नहीं देख सकती।

(च) क़ुरआन तथा गहरे समुद्र एवं आंतरिक लहरें

क़ुरआन में अल्लाह ने कहा है :

﴿अथवा उन अंधकार के समान है, जो अति गहरे समुद्र में हों, जिसे ऊपर से लहरें ढ़ाँपे रखें, और लहरों के ऊपर बादल हों। अर्थात तह-ब-तह अंधकार हैं। जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी सम्भवतः न देख सके ...।﴾ (क़ुरआन , 24:40)

---

(1)"Oceanography" ग्रास एम. ग्रांट पृ. सं. 242, 244, "Introductory Oceanography" थ्रुमन पृ. सं. 300- 303।

(2)"Oceanography" ग्रास एम. ग्रांट पृ. सं. 242, 244, "Introductory Oceanography" थ्रुमन पृ. सं. 300- 303।

क़ुरआन की इस आयत में गहरे समुद्र और महासागर के अंधेरे होने का उल्लेख है। इतना अंधेरा कि यदि मनुष्य अपना हाथ बढ़ाकर उसे देखना चाहे, तो देख न सके। गहरे समुद्र और महासागर का अंधेरा 200 मीटर या उसके नीचे पाया जाता है। यहाँ पहुँचकर प्रकाश प्रायः शुन्य हो जाता है। (चित्र 15 देखिए) नीचे 1000 मीटर के बाद बिल्कुल भी रोशनी नहीं होती[1]।
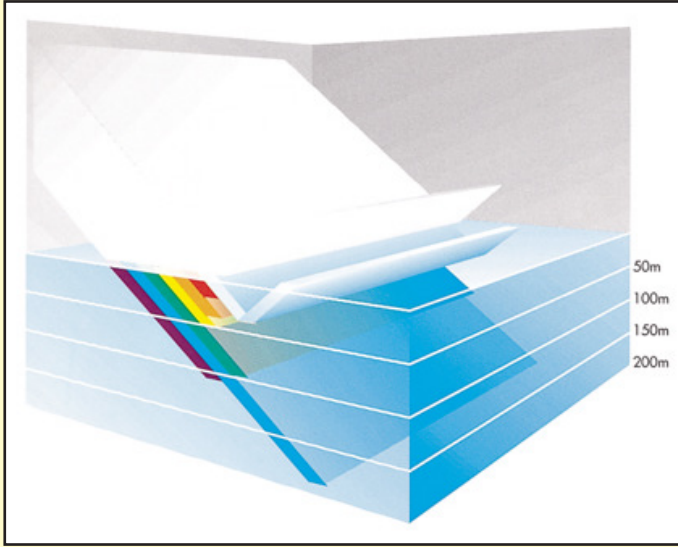
चित्र 15: 3 और 30 प्रतिशत के बीच सूरज की रोशनी समुद्र की सतह पर दिखाई देती है। इसके बाद नीले रंग को छोड़ रंगावली के सभी सात रंग पहले 200 मीटर की दूरी में एक के बाद एक अवशोषित हो जाते हैं। (महासागर, लेखक : Elder और Pernetta, पृ. 27)।

मनुष्य 40 मीटर से अधिक किसी पनडुब्बी या विशेष साधन की सहायता के बिना डुबकी नहीं लगा सकता। मनुष्य बिना किसी सहायता के महासागर के गहरे अन्धेरे भाग जैसे 200 मीटर की गहराई में रह नहीं सकता।

वैज्ञानिकों ने हाल ही में इस अन्धेरे का विशेष उपकरणों और पनडुब्बी के मध्यम से, जिनके ज़रिए वे समुद्रों अंदर गोता लगाने में सक्षम हुए हैं, पता लगाया है।

हम पिछली आयतों की निम्नलिखित पन्क्तियों, जिनमें कहा गया है कि "गहरे समुद्र में, वह लहरों से ढका हुआ है, और उसके ऊपर लहरें

---

(1) "Ocean" एल्डर, डैनी और जॉन पेर्नेत्ता, पृ. सं. 27। .

हैं, और उसके ऊपर बादल हैं।" से भी पता लगा सकते हैं कि समुद्र और महासागर का गहरा जल लहरों से ढ़का है, और इन लहरों के ऊपर दूसरी लहरें हैं। यह बात साफ है कि दूसरी लहरें सतह की लहरें हैं, जिन्हें हम देख सकते हैं, क्योंकि यह आयत लहरों के ऊपर बादलों का उल्लेख करती है। लेकिन पहली लहरों का क्या हैं? वैज्ञनिकों ने हाल ही में पता लगाया है कि समुद्र के अंदर भीतरी लहरें भी होती हैं, जो भिन्न सघनता के बीच सघन के समीप घटित होती हैं। (चित्र न. 16 देखें).[1]
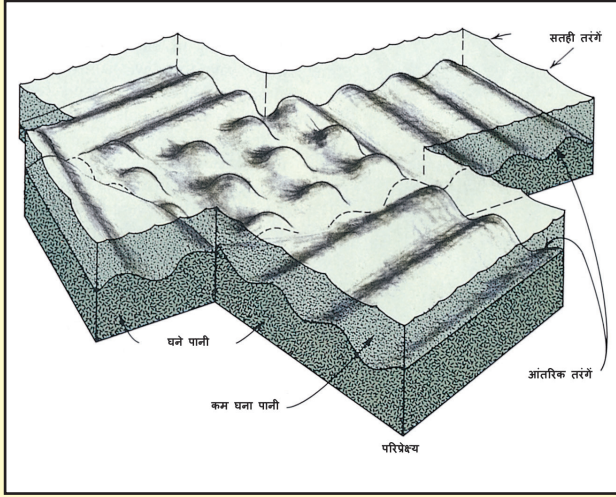
चित्र 16: अलग घनत्व के पानी की दो पर्तों के बीच इंटरफेस में आंतरिक तरंगें। एक सघन (नीचे वाली) दूसरा कम सघन (ऊपर वाली) है, (समुद्र विज्ञान, गरास, पृ. 204) ।

भीतरी लहरें समुद्र और महासागर के गहरे जल को ढँपी होती हैं, क्योंकि गहरे जल की सघनता अपने ऊपरी जल से ज़्यादा है। भीतरी लहरें भी सतही लहरों की तरह बर्ताव करती हैं। वह सतही लहरों की तरह टूट भी जाती हैं। भीतरी लहरों को मनुष्य की दृष्टि नहीं देखी सकती, परन्तु तापमान और खारेपन का अध्ययन करके दिए हुए स्थान पर उसकी खोज की जा कती है[2]।

(1) " Oceanography" ग्रास, पु. सं. 205।
(2) " Oceanography" ग्रास, पु. सं. 205।

(छ) कुरआन तथा बादल

वैज्ञनिकों ने बादलों के प्रकारों पर विवेचना की है और पाया है कि बरसने वाले बादल अपना आकार निश्चित तन्त्र और प्रक्रिया से प्राप्त करते हैं एवं विशेष प्रकार के बादल और हवा के साथ विशेष प्रकार की गतिविधयाँ जुड़ी होती हैं।

एक प्रकार का बरसने वाला बादल क्यूमूलोनिम्बस बादल (Cumu-lonimbus) है। मौसम वैज्ञनिकों ने क्यूमुलोनिम्बस बादल (Cumulo-nimbuscloud) के बारे में अध्ययन किया है और पता लगाया है कि किस तरह कयुमुलोनिमबस बादल आकार लेते हैं और किस तरह वह वर्षा, ओले और बिजली उत्पन्न करते हैं।

उनके अनुसार क्यूमूलोनिम्बस बादल वर्षा उत्पन्न करने के लिए निम्नलिखित प्रक्रियाओं से गुजरते हैं :

1) पवन का बादलों को धकेलना : क्यूमूलोनिम्बस बादल उस समय बनते हैं, जब हवा बादल के छोटे-छोटे टुकड़ों को धकेलकर एक ऐसी जगह जमा करती हैं, जहाँ वह एकत्र होते हैं।.

चित्र स. 17, सेटेलाइट फोटो के अनुसार बादल एकित्रित एरिया B, C, एवं D की तरफ जाते हुए। तीर हवा की दिशा को दर्शाता है। (The Use of Satellite Pictures in Weather Analysis and Forecasting, Anderson and others, p. 188)
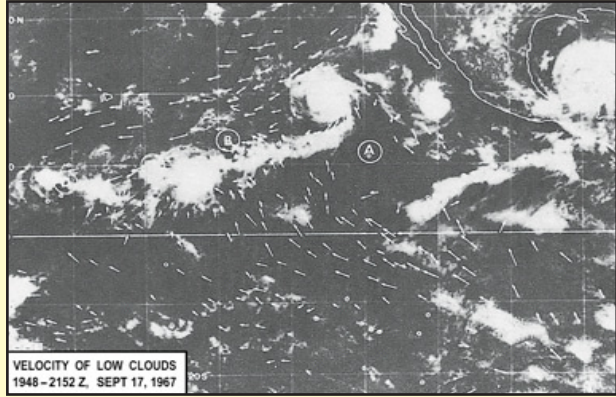
2) संयोग : इसके बाद बादल के छोटे-छोटे टुकड़े आपस में मिल जाते हैं और उनके मिलने से एक बड़ा बादल बन जाता है(1)। (देखीए चित्र 18 और 19) .

3) अंबार बननाः जब छोटे-छोटे बादलों का ढ़ेर बन जाता है तो इस बड़े ढ़ेर में एक चढ़ाव सा बनने लगता है। यह बादलों का चढ़ाव किनारों की तुलना में बादल के केंद्र में ज्यादा होता है। यह चढ़ाव बादल

(1) "The Atmophere" अन्थेस व अन्य, पृ. सं. 268269-, और "Elements of Metreology" मिलर और जैकसी. थॉम्पसन, पृ. 141- 142।
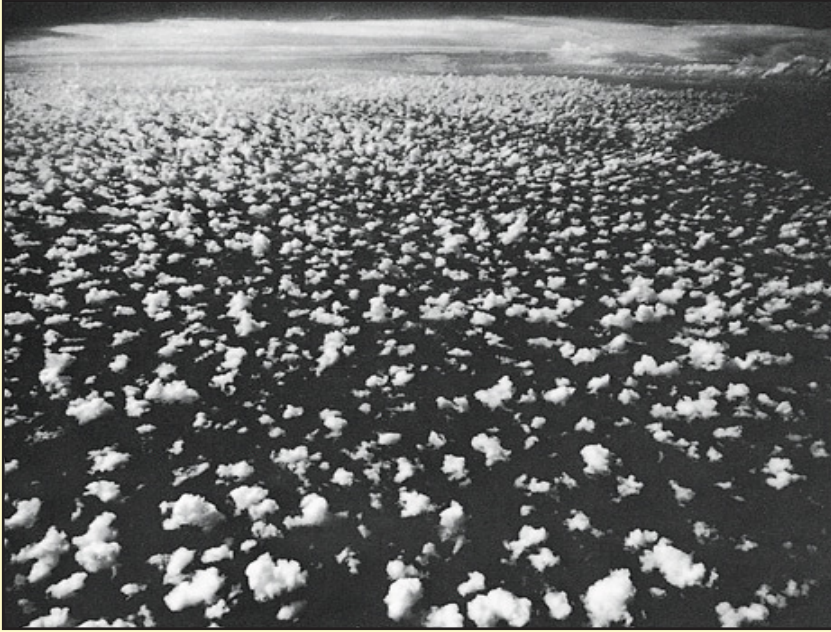
चित्र स. 18, बादल के छोटे-छोटे टुकड़े (Cumulus Cloud) होरीजन के निकट कन्वर्जेंस जोन की तरफ बढ़ते हुए, जहाँ हम एक क्यूमूलोनिम्बस बादल देख सकते हैं। (बादल और तूफ़ान (Clouds and storms), लेखक : लुडलाम (Ludlam), प्लेट 7.4.)

को लंबाई में बढ़ने में मदद करता है। इस तरह बादल का ढेर बन जाता है। (देखें चित्र 19 (B), 20, 21) यह लंबाई में बढ़ोत्तरी बादल को वातावरण के ठंडे क्षेत्र की तरफ बढ़ाने का कारण बनती है, जहाँ पानी के कतरे एवं ओले धीरे-धीरे बड़े होने लगते हैं। जब इन कतरों
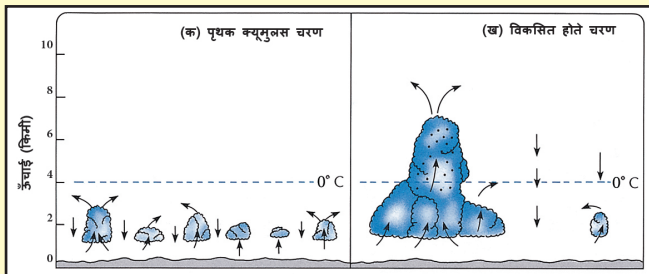
चित्र 19:(के) छोटे-छोटे बिखरे हुए बादल (Cumulus cloud)। (ख) जब छोटे-छोटे बादल के टुकड़े एक जगह जमा होते हैं, तो एक बड़ा आकार बनता है। (वायुमंडल, लेखक : अंथेज तथा अन्य (Anthes and others), पृ. 141)

एवं ओलों को उठते हुए गैस के लिए संभालना मुश्किल हो जाता है, तो बारिश होने लगती है और ओले पड़ते हैं[1]।

चित्र 20: एक कयूमूलोनिम्बस बादल, जब बादलों का ढेर बन जाता है, तो बारिश होती है। (मौसम और जलवायु, लेखक : बोडिन, पृ. 123)
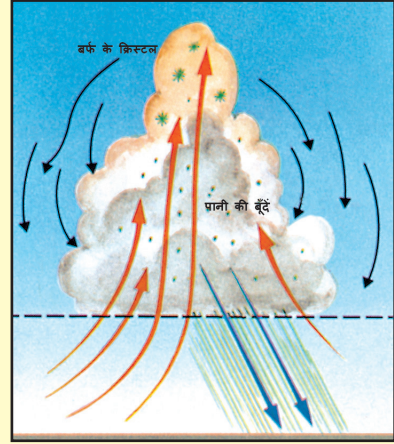
अल्लाह क़ुरआन में कहता है :

﴿क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को कैसे चालाता है, फिर उन्हें मिलाता है, फिर उन्हें तह-ब-तह कर देता है? फिर आप देखते हैं कि उनसे बर्षा होती है।﴾ (क़ुरआन, 24:43)

मौसम वैज्ञानिकों ने हाल ही में बादलों के पैदा होने, आकार लेने और कार्य करने को विस्तार से वायुयानों, उपग्रहों तथा गुब्बारों जैसे अनेक अत्याधुनिक साधनों से पता किया है, ताकि वह पवन और उसकी दिशा का अध्ययन कर सकें, नमी और उसके परिवर्तनों को नाप सकें और वातावरण के दबाव के संतुलन और परिवर्तन को निर्धारित कर सकें[2]।

उक्त आयत बादलों और वर्षा के अध्ययन के बाद ओलों और बिजली के बारे में भी बात करती है। उसमें है :

﴿वही आकाश की ओर से पर्वत (बादल) से ओले बरसाता है, फिर जिसपर चाहे उसे बरसाता तथा जिनसे चाहे उनपर से उन्हें रोक लेता है। बादलों से निकलने वाली तनिक-सी चमक

---

(1) "The Atmophere" अन्थेस व अन्य, पृ. सं. 268269-, और "Elements of Metreology" मिलर और जैकसी. थॉम्पसन, पृ. 141- 142।

(2) “इजाज़ अल-क़ुरआन अल-करीम फी वस्फ अलअनवा”, मक्की तथा अन्य, पृ. 55।

चित्र 21: क्यूमूलोनिम्बस बादल का दूसरा चित्र। (कलर गाइड टू क्लाउड्स", स्कोरर एंड वेक्स्लेर, पृ. 23)

भी आँखों की दृष्टि को ले जा सकती है।﴾ (क़ुरआन , 24:43)

मौसम वैज्ञानिकों ने इस बात को साबित किया है और माना है कि क्यूमूलोनिम्बस बादल, जो ओले बरसाते हैं, पर्वतों के सामान 24000 से 30000 फिट (4.7 से 5.7 मील),[1] ऊँचाई तक पहुँचते हैं, जैसा कि क़ुरआन ने कहा है : "और वह आकाश के पर्वत (बादल) से ओले बरसाता है।

इस आयत से एक प्रश्न उठ सकता है कि क्यों क़ुरआन ओलो के संदर्भ में "चमक" का उल्लेख करता है? क्या ओला ही बिजली पैदा करने का मुख्य स्रोत है? चलें देखते हैं कि "Meteorology today" नामक पुस्तक इस विषय पर क्या कहती है?

यह पुस्तक कहती है कि जब बर्फ स्फाटीक और अति शीतल बूंदों के बादल किसी क्षेत्र से ओले गिरते हों, तो फिर वह बादल इर्टिफाइड हो जाता है। जैसे ही बूंद एक ओले से टकराती है, वह जम जाती है, और अप्रकट गर्मी मुक्त करती है, यह ओले की सतह चारों ओर बर्फ स्फाटीक से गर्म होता है। जब ओला किसी बर्फ स्फाटीक से गर्म होता है तब ओला किसी बर्फ स्फाटीक से सम्पर्क करता है, तो अणु ठण्डी वस्तु से गर्म वस्तु की ओर जाते हैं। वैसा ही प्रभाव घटता है जब अति शीतल

(1) " Elements of Metreology", मिलर और जैकसी. थॉम्पसन, पृ. सं. 141।

बूंदों का ओला से संपर्क होता है और घनात्मक नन्हें किरच टूट जाते हैं। यहाँ हलके धनात्मक कर्ण बादल के ऊपरी क्षेत्र पहुँच जाते हैं, नकारात्मक ओले हैं अतः बादलों का नीचे का क्षेत्र नाकारात्मक हो जाता है। फिर यह नकारात्मक शुल्क बिजली के रूप मुक्त होता है।
अतः इसके बाद यह साफ हो जाता है कि ओले ही बिजली उत्पन्न करने का मुख्य स्रोत हैं [1]।.

बिजली का यह ज्ञान हाल ही में दरयाफ्त हुआ है। 1600 ई.डी. तक अरस्तू के विचार मौसम विज्ञान पर हावी थे। उदाहरण के तौर पर उन्होंने कहा था कि वातानरण में दो प्रकार के आवेश होते हैं, एक नमकीन और दूसरा सूखा। उन्होंने साथ ही कहा था कि सूखे आवेश का आस-पास के बादलों से टकराने के कारण गरज की आवाज़ है, और बिजली सूखे आवेश में आग लग जाने से और बारीक एवं अशक्त दहन के जलन से पैदा होती है[2]। मौसम विज्ञान के बारे में कुछ धारणाएँ हैं, जो1400 साल पहले क़ुरआन के अवतरण के समय रायज थीं।
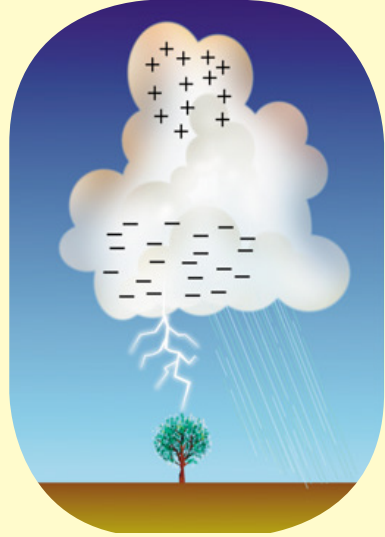
चित्र 22: नेगेटिवेचार्ज पृथ्वी वज्रपात के रूप में बरसते होंए।

(ज) पवित्र क़ुरआन के वैज्ञानिक चमत्कारों पर वैज्ञानिकों की टिप्पणियाँ

पवित्र क़ुरआन के वैज्ञानिक चमत्कारों पर वैज्ञानिकों की टिप्पणियाँ निम्नलिखित हैं। यह सारी टिप्पणियाँ “यही सच है” (This is The Truth) नामक वीडियो टेप से ली गई हैं। इस चलचित्र में आप वैज्ञानिकों को देख और सुन सकते हैं, जब वे यह टिप्पणीयाँ दे रहे हों। (कृपया इस वीडियो को देखने, इस वीडियो की कॉपी इन टिप्पिणियों को ऑनलाइन पढ़ने के लिए www.islam-guide.com/truth पर आएँ।

(1) " Metreology Today" अहरेंस, पृ. 437।
(2) "The Works of Aristotle" अंग्रेजी में अनुवादः "मेट्रोलोगिक", Vol. 3, रॉस, डब्ल्यू डी. व अन्य, पृ. 369a-369b।

1) डॉक्टर टी. वी. एन. परसाउद (T.V.N. Persaud) मानिटोबा विश्वविद्यालय, मानिटोबा, कनाडा, में शरीर रचना, शिशु रोग व स्वस्थ, प्रसूति-विज्ञान, स्त्री रोग विज्ञान एवं प्रजनन विज्ञान के प्राध्यपक हैं। वहाँ वे 16 साल तक शरीर रचना विभाग के चेयरमैन रहे हैं। वह अपने मैदान के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। उन्होंने 24 पाठ्य पुस्तकें या तो लिखी हैं या उनका संपादन किया है और 181 वैज्ञानिक लेख प्रकाशित किए हैं। 1991 में उन्हें शरीर विज्ञान कनाडियन सभा (Canadian Association of Anatomists) की तरफ से दिए जाने वाले शरीर रचना विभाग के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार जे. सी. बी. ग्रान्ड पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जब उनसे क़ुरआन के वैज्ञानिक चमत्कारों के विषय में पूछा गया, जिनके बारे में स्वयं उन्होंने अनुसंधान किया था, तो उन्होंने कहा :

"जिस तरह से मुझे समझाया गया है, उससे यह समझ में आता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक साधारण मनुष्य थे। उन्हे पढ़ना-लिखना नहीं आता था। वास्तव में वह एक निरक्षर थे। हम 1400 साल पहले की बात कर रहे हैं। आप एक ऐसे निरक्षर मनुष्य के बारे में बात कर रहे हैं, जो सुलझी हुई बात करता है एवं सटीक वैज्ञानिक तथ्य पेश करता है। मुझे व्यक्तिगत तौर पर यह समझ में नहीं आता है कि यह कैसे एक निरासंयोग हो सकता है? बहुत सारी परीशुद्धताएँ हैं और डॉक्टर मुर की तरह मेरे मन में भी कोई कठिनाई नहीं है कि यह अल्लाह की तरफ से दिव्य प्रेरणा या वह्य है, जिससे यह कथन प्रकट हुए।"

प्राध्यापक परसाउद ने अपनी कुछ किताबों में क़ुरआन की कुछ आयतों और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीसों को जमा किया है। वह विभिन्न सम्मेलनों में भी क़ुरआन की आयतों और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीसों को पेश करते रहे हैं।

2) डॉ॰ जो लीह सिमसोन (Dr. Joe Leigh Simpson) डॉ सिमसोन हॉस्टन, टेक्सास, अमेरीका के बेलोर कॉलेज ऑफ मेडिसीन में स्त्री रोग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष, स्त्री रोग विज्ञान के प्राध्यापक और आणविक और मानव आनुवंशिकी के प्राध्यापक भी रहे हैं। पहले वह तेनिस्सी विश्वविद्यालय, मैमफिस, तेनिस्सी, अमेरीका में प्रासविक और स्त्री रोग विज्ञान विभाग के प्रासविक और स्त्री रोग विज्ञान के चेयरमैन थे। वह अमेरिकी प्रजनन समाज के अध्यक्ष भी थे। उन्होंने बहुत-से पुरस्कार प्राप्त किए हैं, जिनमें सन 1992 में (Association of Professors of Obstetrics and Gynecology Public Recoznition Award) भी शामिल है। प्राध्यापक सिमसोन ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

की निम्नलिखित दो हदीसों का अध्ययन किया है :

{तुममें से हर एक की सृष्टि के सारे अंगभूत को माँ के पेट के गर्भाशय में चालीस दिन तक जमा किया जाता है।"}[1]

{ जब भ्रूण के बयालीस (42) दिन गुज़र जाते हैं, तब अल्लाह एक फरिश्ते को भेजता है, जो इस भ्रूण को आकार देता है और उसका कान, आँख, चमड़ा, माँस और हड्डी की रचना करता है [2]**।..}**

उन्होंने इन दो हदीसों के व्यापक अध्ययन के बाद यह पता लगाया कि प्रथम चालीस दिन भ्रूण की उत्पत्ति का महत्वपूर्ण चरण होते हैं। वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की इन दो वाणियों की पूर्ण परिशुद्धता और सटीकता से बहुत ही प्रभावित थे। उन्होंने एक कॉन्फ्रेंस में निम्नलिखित विचार व्यक्त किए थे :

उपरोक्त दो हदीसों से हमें भ्रूण के प्रथम चालीस दिनों में होने वाले विकास के प्रमुख घटनाक्रम को एक निश्चित समय तालिका के बारे में पता चलता है। इन हदीसों में निहित ज्ञान उस समय उपलब्ध वैज्ञानिक जानकारी के आधार से प्राप्त हो ही नहीं सकता। मुझे लगता है कि विज्ञान और धर्म में कोई टकराव नहीं है। बल्कि धर्म अपने बहुत सारे परम्परागत वैज्ञानिक विचारों के जरिए विज्ञान को नई सोच दे सकता है और उसका मार्गदर्शन भी कर सकता है। क़ुरआन में व्यक्त वैज्ञानिक ज्ञान आज भी सदियों बाद वैध है और यह कि क़ुरआन में पाए जाने वाले ज्ञान सत्य में अल्लाह से प्राप्त किया गया ज्ञान है, यह मानवीय ज्ञान नहीं हो सकता।

3) ई. मार्शल जॉनसन (Dr. E. Marshall Johnson) संयुक्त राज्य अमेरिका के फिलाडेल्फिया में स्थित जेफ़र्सन यूनिवर्सिटी में शरीर रचना विज्ञान एवं विकासात्मक जीव विज्ञान विभाग के 22 सालों से प्रोफ़ेसर तथा वहाँ के अध्यक्ष और उसी विश्वविध्यालय के डेनियल बौघ इंस्टीट्यूट के निर्देशक भी रहे हैं। वह टेट्रालोजी सुसाइटी के अध्यक्ष भी रहे हैं। उनके 200 से अधिक प्रकाशन हैं। उन्होंने सन 1981 में सऊदी अरब के दम्माम में आयोजित सातवीं मेडिकल कॉन्फ्रेंस में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए कहा :

"संक्षेप : क़ुरआन न केवल बाहरी आकार के विकास का उल्लेख करता है, बल्कि भ्रूण की भीतरी प्रक्रियाओं की भी जानकारी देता है, और आज इन जानकारियों को विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है। "

---

(1) "सहीह मुस्लिम" हदीस संख्या : 2643।
(2) "सहीह मुस्लिम" हदीस संख्या : 2645

साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि "मैं एक वैज्ञानिक होने की हैसियत से उन बातों को सत्य कह सकता हूँ, जिनको मैं सही देखता हूँ। मैं क़ुरआन के उन शब्दों को समझता हूँ, जो मेरे लिए अनुवाद किए गए हैं। जैसा कि मैंने पहले उदाहरण दिया है कि यदि मैं उस समय (1400 साल पहले) होता और मैं वह जानता, जो आज मैं जानता हूँ और मुझे बयान करने के लिए कहा जाता, जैसा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह बातें कही हैं, तो यह बातें मैं नहीं कह सकता था। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यह जानकारियाँ किसी विशेष स्रोत से प्राप्त कर रहे थे। तथ्य का इनकार करने का कोई प्रमाण नहीं होने के कारण यह अल्लाह ही की वाणी और उसी के सहयोग से है, मैं इसको निस्संकोच स्वीकार करता हूँ।"(1)

4) **डॉ. विलियम डब्ल्यु हे (Dr. William W. Hey)** एक जाने-माने समुद्र वैज्ञानिक हैं। वह कोलाराडो विश्वविध्यालय, बोल्डर, कोलाराडो अमेरीका के भूविज्ञान के प्राध्यापक हैं। वह इससे पहले फलोरीडा अमेरीका मियामी विश्वविध्यालय, मियामी के रोशेनशियल स्कूस ऑफ मारीन एंड एटमोसफेयर साइंसेज के डीन भी रहे हैं। हाल ही में समुद्री तथ्य जिनका क़ुरआन में उल्लेख है, उनके संदर्भ में उनसे पूछे जाने पर उन्होंने कहा :

"मुझे बहुत दिलचस्प लगता है कि इस तरह का ज्ञान प्राचीन धर्म ग्रंथों जैसा कि पवित्र क़ुरआन में लिखा हुआ है। यह तथ्य कहाँ से आए? क़ुरआन में इनका वर्णन कैसे हुआ? इसके बारे में मुझे नहीं मालूम। इन हक़ीक़तों को जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं है। मुझे लगता है कि सच में यह अल्लाह ही की वाणी है।"

5) **डॉ. गेराल्ड सी. जेरिन्जर (Dr. Gerald C. Goeringer)** अमेरिका, वाशिंगटन डी. सी. में जार्ज टाउन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मेडिसीन के सेल बायोलोजी विभाग में मेडिकल एम्बर्योलोजी के प्रोफ़ेसर हैं। रियाज़, सऊदी अरब में आयोजित आठवीं मेडिकल कॉन्फ्रेंन्स में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डा. जेरिन्जर ने कहा :

"पवित्र क़ुरआन की कुछ आयतों में मानव भ्रूण विकास से अंग प्रत्यंग की संरचना की प्रक्रिया तथा चरणों के बारे में बड़ा व्यापक विवरण दिया गया है। मानव विकास की इस तरह परिपूर्ण और स्पष्ट अभिलेख जैसा कि वर्गीकरण, शब्दावली और विवरण इससे पहले नहीं मिलती है। इनमें से अधिकतम जानकारीयों का उल्लेख शताब्दियों बाद

---

(1) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अनपढ़ थे। न लिखना जानते थे न पढ़ना। परन्तु वह अपने साथियों को क़ुरआन पढ़ाते और उनमें से कुछ को लिखने को कहते थे।.

के वैज्ञानिक साहित्य में ही केवल मिल सकता है।"

6) **डॉ. योसीहाइड कोजाइ (Dr. Yoshihide Kozai)** टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान में प्रोफ़ेसर हैं। वे राष्ट्रीय खगोल वैधशाला के निरीक्षक भी रहे हैं। उनका कहना है :

"क़ुरआन के खगोलीय तथ्यों से मैं बहुत प्रभावित हूँ और हम आधुनिक खगोलीय ब्रहमांड के एक छोटे-से टुकड़े का अध्ययन कर रहे हैं। क्योंकि दूरबीन से आकाश के कुछ ही भाग नज़र आ सकता है, सम्पूर्ण ब्रहमांड नहीं देख सकते। क़ुरआन के अध्ययन से इस विषय में अनुत्तरित प्रशनों का जवाब खोजकर ब्रहमाण्ड के अनुसन्धान में मैं बहुत ही अच्छा भविष्य देख रहा हूँ।"

7) **प्रोफ़ेसर तेजातात तेजासेन (Professor Tejatat Tejasen)** थाईलैंड, Chiangmai के Chiang Mai University में Department of Anatomy के वर्तमान सभापति और Faculty of Medicine के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं। सऊदी अरब के रियाज में आयोजित आठवीं सऊदी मेडिकल कॉन्फ्रेंस में उन्होaने कहा है :

“मैं पिछले तीन साल से क़ुरआन में दिलचस्पी ले रहा हूँ। क़ुरआन के अध्ययन तथा इस कान्फ्रेंस में मिली जानकारी से मुझको पूर्ण विश्वाश हो गया है कि क़ुरआन में जितनी बातें आज से 1400 साल पहले कही गई हैं, वे सब सही और सत्य हैं। यह बात आज वैज्ञानिक तथ्य द्वारा प्रमाणित की जा सकती है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अनपढ़ थे। वह अवश्य ही पैग़म्बर थे। उन्होंने विधाता की तरफ से इन ज्ञानों को प्राप्त किया और जनसमुदाय के सामने उनका वर्णन कीया, जो आज क़ुरआन की शक्ल में हमारे सामने हैं। वह विधाता सत्य में अल्लाह ही हो सकता है। इसलिए मेरा मानना है कि यही समय मुनासिब है कि हम क़बूल करें "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई इबादत के योग्य नहीं) और "मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" (मुहम्मद अल्लाह के पैगंबर हैं)। अंत में मैं इस कान्फ्रेंस के सफल आयोजन पर बधाई पेश करता हूँ। मैं न केवल वैज्ञानिक व धार्मिक सोचों से लाभान्वित हुआ, बल्कि यहाँ मुझे प्रसिद्ध वैज्ञानिकों से मिलने एवं बहुत-से नए दोस्त बनाने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। और सबसे अहम बात यह कि मैंने "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" को पाया और मुसलमान होने का सौभाग्य प्राप्त किया।"

पवित्र क़ुरआन में वर्णित इन वैज्ञानिक चमत्कारों के इन स्पष्ट उदाहरणों और उनपर वैज्ञानिकों की टिप्पणियों को पढ़ने के बाद हम स्वयं निर्णय करें और अपने आपसे कुछ प्रशन पूछें।

- क्या चौदह शताब्दी पूर्व प्रकट हुए क़ुरआन में बयान किए गए और हाल के दिनों में विभिन्न मैदानों में खोजे गए इन वैज्ञानिक तथ्यों का मेल खाना सिर्फ इत्तेफाक है?
- क्या क़ुरआन का मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अपने ज्ञान के आधार पर लिखा जाना संभव है?

इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि यह कभी भी संभव नहीं है, बल्कि यह किताब क़ुरआन अल्लाह की तरफ से अवतरित किताब है।

(पवित्र क़ुरआन में मौजूद वैज्ञानिक चमत्कारों पर आधारित अधिक ऑनलाइन विडियो टेपों, पुस्तकों, लेखों के लिए www.islam-guide.com/science पर जाएँ या पेज 69-70 में सूचीबद्ध किसी भी संगठन से संपर्क करें।)

(2) पवित्र क़ुरआन की चुनौती

महान अल्लाह ने क़ुरआन में कहा है :

﴾और यदि तुम्हें उसमें संदेह हो जिसे हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर अवतरित किया है, तथा तुम सत्यवादी हो, तो इसी जैसी एक सूरा बना लाओ। तुम्हें छूट है कि अल्लाह के सिवाये अपने सहयोगियों को भी मदद ले लो। यदि तुमने नहीं किया और तुम कदापि कर भी नहीं सकते, तो (उसे सत्य स्वीकार कर) उस अग्नि से डरो जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जो काफिरों के लिए तैयार की गई है और ईमान वालों और सत्य कर्म करने वालों को उन स्वर्गों की शुभ सूचना दे दो, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उनके फल खाने के लिए दिए जाएंगे, तो कहेंगे कि इससे पूर्व हमें खाने को यही दिया गया था, वह समरुपी फल होंगे, तथा उनके लिए उसमें पवित्र पत्नियां होंगी और वे उसमें सदैव रहेंगे।﴿ (क़ुरआन , 2:23 -25)

कुरआन को अवतरित हुए 1400 वर्ष गुज़र चुके हैं, परन्तु तबसे लेकर आज तक कोई भी व्यक्ति कुरआन की सूरों जैसी अद्भुत शैली वाली, सुगम, सुंदर, हिकमत से परिपूर्ण तथा सही एवं सटीक सूचना प्रस्तुत करने वाली तथा इन जैसी अन्य महत्वरूर्ण विशेषताओं वाली एक आयत भी प्रस्तुत न कर सका। गौर करने की बात यह है कि कुरआन की सबसे छोटी सूरा में केवल 10 शब्द हैं। फिर भी आज तक किसी ने कुरआन की इस चुनौती को स्वीकार नहीं किया[1]। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ अरब अविश्वाशी शत्रुओं ने उन्हें अल्लाह का सन्देशवाहक मानने से इनकार किया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झूठा पैग़म्बर साबित करने के लिए उस चुनौती को स्वीकारने का विफल प्रयास किया भी। पर वह ऐसा करने में नाकाम रहे[2]। यह नाकामी इस हक़ीक़त के बावजूद उनके हाथ आई कि कुरआन उन्हीं लोगों की भाषा और शैली में अवतरित हुआ था एवं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में अरब लोग उच्च कोटि का साहित्यिक ज़ौक़ रखते थे तथा बड़ी सुंदर कविताएँ लिखते थे, जिनकी प्रशंसा आज भी होती है।

ऊपर का चित्र कुरआन की सबसे छोटी सूरा (सूरा संख्या :108) का है, जिसमें केवल 10 शब्द हैं। इसके बावजूद आज तक किसी ने कुरआन की इस चुनौती को स्वीकार नहीं किया।

(3) इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन की भविष्यवाणी बाइबिल में

बाइबिल में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के बारे में उल्लेख हुआ है। बाइबिल में विश्वाश रखने वालों के लिए यह एक प्रमाण है कि इस्लाम सच्चा धर्म है। बाइबिल के प्रथम भाग, श्लोक 18 में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम (Mose) ने कहा है कि ईश्वर ने उनसे कहा :

---

(1) "अल-बुहरान फी उलूम अल-कुरआन", अल जरकशी, खंड 2, पृ. 224, 226।
(2) "अल-बुहरान फी उलूम अल-कुरआन", अल जरकशी, खंड 2, पृ. 224, 226।

"मैं उन लोगों के लिए उन्हीं में से तुम जैसा एक दूत भेजूँगा। मैं उनके मुँह में अपनी वाणी रखूँगा और वह मेरे आदेश अनुसार प्रत्येक बात उन लोगों को बताएँगे। अगर किसी ने उनकी बात नहीं सुनी, तो मैं स्वयं उस व्यक्ति से हिसाब लूँगा।" (Deuteronomy18 : 18-19)[1]

इस श्लोक में आने वाले पैगम्बर के बारे में जो भविष्यवाणी की गई है, उसके अनुसार उनके निम्नलिखित तीन लक्षण होने चाहिएँ, जो ऊपर बयान किए जा चुके हैं :

क- वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसे होंगे।

ख- वह इस्राईली अर्थात इस्माईल के वंश से होंगे।

ग- ईश्वर अपनी वाणी (शब्द) उस नबी के मुँह में डालेगा और वह उनके आदेश का प्रचार करने वाले होंगे।

इन तीन विशेषताओं को तफसील से समझें :

क - मूसा अलैहिस्सलाम की तरह ही एक पैग़म्बर

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच जितनी समानताएँ हैं, अल्लाह के अन्य किसी दो पैग़म्बरों के बीच नहीं हैं। दोनों एक विस्तृत और सम्पूर्ण जीवन-विधान के साथ भेजे गए थे, दोनों ने दुश्मनों का सामना करते हुए चमत्कारिक रूप में सफलता प्राप्त की थी, दोनों ही अल्लाह के पैग़म्बर तथा राज्य संचालक के रुप में स्वीकार किए गए और दोनों दुस्मनों की चाल, षड्यंत्र तथा हत्या के प्रयास से बचने के लिए अपना देश छोड़कर निकल गए। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की जीवनी के साथ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की जीवनी मेल नहीं खाती। क्योंकि उन दोनों में न तो उक्त बातों में समानता है और न सामान्य जन्म, पारिवारिक जीवन तथा प्राकृतिक मृत्यु के मामले में समानता है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम में यह तीनों बातें नहीं थीं। जबकि हज़रत मूसा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में यह तथ्य पाए जाते हैं। अभी भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायी उनको अल्लाह के दूत के स्थान पर उसकी संतान कहते हैं और इसी से उनको पहचानते हैं। जबकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने मानने वालों के बीच अल्लाह के नबी की हैसियत से परिचित हैं। इस तरह यह मानना पड़ेगा कि बाइबिल की उपर्युक्त भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में की गई है, ना कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सम्बन्ध में। क्योंकि हज़रत मूसा

(1) इस किताब में बाइबिल के वर्स "N.I.V. Study Bible", न्यू अंतर्राष्ट्रीय संस्करण, ग्रैंड रैपिड्स से, लिए गए हैं।

अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच ईसा अलैहिस्सलाम की तुलना में अधिक समानताएँ हैं।

दूसरी हक़ीक़त यह भी है कि “Gospel of John” में वर्णित है कि यहुदी लोग तीन भविष्यवाणी के पूरी होने की प्रतीक्षा कर रहे थे :

1 - ईसा (अलैहिस्सलाम) का आगमन 2- एलिजा (Elijah) का आगमन 3- पैग़म्बर (The Prophet) का आगमन।

बैपटिस्ट जॉन (Baptist john) से पूछे गए तीन प्रश्नों से भी इस बात की पुष्टि होती है। जब यरूशलेम के यहूदियों द्वारा भेजे गए पुजारियों ने जॉन से पूछा कि तुम कौन हो? उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि "मैं ईसा (Christ) नहीं हूँ।" उन लोगों ने फिर उनसे पूछा कि आप आखिर कौन हैं? क्या एलिजा हैं? उन्होने कहा "नहीं।" फिर उन लोगों ने पूछा : क्या आप पैग़म्बर (Prophet) हैं? उन्होने कहा : "नहीं।" (John 1:19-21) बाइबिल का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से जॉन 1 : 21 में वर्णित हाशिये की टीका में हम संदेष्टा (The prophet) का शब्द पाते हैं। यह शब्द Denteronomy 18:15 और 18 : 18 में उपयुक्त भविष्यवाणी की तरफ इशारा करते हैं। (अर्थात उसका संबंध उसके साथ है)(1) । इस बात से यह निष्कर्ष निकालना बिल्कुल ही आसान है कि Denteronomy 18 : 18 में उल्लिखित दूत (Prophet) ईसा अलैहिस्सलाम नहीं हैं, बल्कि उनका होना ही यहाँ पर असंभव है।

ख- इस्राईली वंशज से होना

इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो बेटे थे। इस्माईल और इस्हाक़ अलैहिमस्सलाम। (Genesis - 21) इस्माईल अलैहिस्सलाम अरबों तथा इस्हाक़ अलैहिस्सलाम यहूदियों के पितामह हैं। ऊपर उल्लिखित जिस पैग़म्बर की बात की जा रही है, उनके बारे में कहा गया कि वह यहूदियों में से ना होकर उनके भाई इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद से होंगे। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो इस्माईल (अलिस्सलाम) की नस्ल से हैं, वही यह नबी हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

“Book of Asaiah” : 42 : 1-13 में ईश्वर के एक “चयनित” दास का उल्लेख हुआ है, जिसे उसने चुन रखा है और एक दूत का भी, जो अल्लाह के उतारे हुए धर्म-विधान के साथ आएँगे, जो "विश्व में इंसाफ स्थापित होने तक निरंतर काम करेंग तथा विभिन्न महाद्वीपों के लोग उसके धर्म विधान की प्रतीक्षा करेंगे।” (Isaiah 42:4) 11वें श्लोक के अनुसार प्रतीक्षित दूत (The messenger) केदार की नस्ल से होंगे। केदार कौन हैं? “Genesis” के 25:13 श्लोक के अनुसार केदार इस्माईल अलैहिस्सलाम के दूसरे लड़के थे। और इस्माईल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पिता हैं।

(1) "N.I.V. Study Bible", न्यू अंतर्राष्ट्रीय संस्करण, ग्रैंड रैपिड्स, में 1, 21, पृ. 1594 का हाशिया देखें।

ग- अल्लाह अपनी वाणी उस दूत के मुँह में डालेगा

अल्लाह की वाणी (पवित्र क़ुरआन) वास्तव में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुँह में डाली गई थी। ईश्वर ने फ़रिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम को भेजकर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी वाणी हू-ब-हू सिखाया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा गया कि उसे सुनकर अपने साथियों को लिखवा दें। अर्थात वे शब्द मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नहीं थे, और न ही वे उनके ज़ेहन की उपज थे, बल्कि वह वाणी हजरत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) द्वारा उनके सीने में उतारी गई थी। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में ही उनकी निगरानी में वे सारे शब्द एवं वाक्य उनके साथियों द्वारा स्मरण के साथ-साथ लिख लिए गए थे।

याद रहे! “Denteronomy” की भविष्यवाणी में अल्लाह ने कहा है कि यदि किसी व्यक्ति ने मेरे दूत की बात को, जो मैंने ही कहा है, मानने से इनकार किया, तो मैं खुद उनका हिसाब लूँगा। (Denter-onomy18 :19)

इसका अर्थ यह है कि बाइबिल पर आस्थावान सभी लोगों को इस पैग़म्बर की कही हुइ बातों पर भी विश्वास रखना चाहिए और वह पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही हैं।

(बाइबिल में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें:(www.islam-guide.com/mib)।

(4) क़ुरआन की भविष्यवाणियाँ जो कालांतर में सत्य साबित हुईं

क़ुरआन की वह भविष्यवाणियाँ जो कालान्तर में सत्य साबित हुईं, उनमें से एक रोमियों का फारसियों पर विजय है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काल में फारसियों ने युद्ध में रोमियों को पराजित किया था, जिसके बाद क़ुरआन ने भविष्यवाणी की थी कि रोमी तीन से लेकर नौ वर्ष के अन्दर फारसियों को पुनः पराजित करेंगे और ऐसा हुआ भी।

﴾निकटवर्ती क्षेत्र में रोमन पराजित हुए हैं, और वह लोग (इस) पराजय के पश्चात, तीन से नौ वर्ष के भीतर फिर विजय प्राप्त करेंगे﴿ (क़ुरआन, 30:2-4)

आएँ देखें इतिहास इन युद्धों के संबंध में क्या कहता है? “History of Byzentine States” नामी किताब में लिखा हुआ है कि सन 613 में रोमन सेना अन्ताकिया (Antioch) नामी स्थान में बुरी तरह से पराजित

हुई थी, जिसके फलस्वरूप फारसी चारों तरफ से तेज गति से आगे बढ़े[1]। ईस स्तिथिति में यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि रोम फारस को दोबारा पराजित कर सकेंगे। लेकिन क़ुरआन ने घोषणा की कि तीन से नौ वर्षों के अन्दर रोम पुनः विजयी होंगे।

रोमियों की उपर्युक्त पराजय के नौ वर्ष बाद सन 622 में दोनों सेनाओं की आर्मीनिया में भिड़न्त हुई और परिणाम रोमीयों के बिजय के रूप में सामने आया। सन 613 की हार के बाद रोमीयों की यह प्रथम विजय थी [2]।इस तरह, क़ुरआन में अल्लाह ने जो घोषणा की थी, वह अक्षरशः सत्य साबित हुई।

इसके अलावा भी क़ुरआन और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहुत सारी भविष्यवाणियाँ कालान्तर में सत्य प्रमाणित होती आई हैं।

(5) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा प्रदर्शित चमत्कार

अल्लाह की कृपा से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथों बहुत सारे चमत्कार प्रकट हुए। उन चमत्कारों के साक्षी बहुत सारे लोग थे। उदाहरणस्वरूप

- मक्का के अविश्वासियों की माँग पर चंद्रमा के दो टुकड़े करना[3]।
- दूसरा चमत्कार पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अपने प्यासे साथियों के लिए अपनी उंगलियों के बीच से पानी निकालना, जबकि उनके साथियों के पास पीने के लिए थोड़ा-सा पानी ही बर्तन में बचा था। साथियों ने आपके निकट आकर निवेदन किया था कि बर्तन में बचे पानी पीने और वज़ू के लिए पर्याप्त नहीं है, तो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपना हाथ बर्तन में डाल दिया और उनकी उंगलियों के बीच से पानी उबल पड़ा और बहने लगा। उस पानी से सभी साथियों ने वज़ू और स्नान किया और पिया भी। उस समय आपके साथ 1500 लोग थे[4]।.

इसके अतिरिक्त भी मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा बहुत सारे चमत्कार प्रदर्शित हुए हैं।

---

(1) "History of the Byzantine", ओस्ट्रोजोरसकी, पृ. 95।

(2) " History of the Byzantine State", ओस्टरोजोरसकी, पृ. 100, 101, "History of The Persia", साइक्स, Vol.1, पृ. 483- 484 तथा "New Encyclopaedia Britanica"।

(3) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 3637 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2802।

(4) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 3576 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं.1856।

(6) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साधारण जीवन

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के संदेष्टा का दायित्व प्राप्त करने से पहले और बाद के जीवन के बीच तुलना करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह सचमुच अल्लाह के पैग़म्बर थे और उन्होंने तात्कालिक लाभ, महानता, मान-सम्मान और शक्ति आर्जित करने के लिए पैग़म्बरी का दावा नहीं किया था।

संदेष्टा का दायित्व प्राप्त करने से पहले उनके सामने कोई आर्थिक कठिनाई नहीं थी। सफल और सम्मानित व्यापारी होने की वजह से आमदनी बहुत ही अधिक थी। संदेष्टा का दायित्व पाने के बाद आर्थिक हिसाब से कमज़ोर होते चले गए। इसे अधिक स्पष्ट रुप से जानने के लिए उनके जीवन पर की गई निम्न टिप्पणियों का विश्लेषण करें।

- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी माँ आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं : "ऐ मेरे भतीजे! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में दो-दो महीने तक चूल्हा नहीं जलता था।" उनके भतीजे ने पूछा कि फिर आप लोग कैसे जीनव यापन रहते थे? उन्होंने उत्तर दिया : "दो काली चीज़ों यानी खजूर और पानी पर हमारा गुज़ारा होता था। उसके अतिरिक्त मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कुछ अंसार पड़ोसी कभी-कभार ऊँट का दूध पहुँचा दिया करते थे।"(1)
- मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथी हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि "संदेष्टा का दायित्व प्राप्त करने के बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मृत्यु तक अच्छे आटे की रोटी नहीं खाई।"(2)
- आपकी पत्नी माँ आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कहती हैं : "मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का सोने का बिछौना छाल का बना हुआ था, जो खजूर के रेशों से भरा हुआ था।"(3).
- अम्र बिन हारिस (रज़ियल्लाहु अन्हु) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक साथी हैं, वह कहते हैं : "मृत्यु के समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने न पैसा छोड़ा और न सम्पत्ति छोड़ी। कुछ भी नहीं छोड़ा, सिवाय इसके कि एक सफेद घोड़ा छोड़ गए, जिसकी आप सवारी करते थे। इसी तरह लड़ाई का हथियार और ज़मीन का एक छोटा-सा टुकड़ा था, लेकिन वह भी दान कर चुके थे।"(4)

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना पूरा जीवन इसी कष्ट के साथ बिताया, जबकि इस्लामी खज़ाना उन्हीं के क़ब्ज़े में था। उनके जीवन में ही अरब उपमहाद्वीप का अधिकतर भाग इस्लामी राष्ट्र के झंडे तले आ चुका था और मुसलमान चारों ओर बिजय का पताका फहरा चुके थे।

(1) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2972, और "सहीह बुखारी" हदीस सं. 2567।
(2) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 5413 और "सुनन अल-तिर्मिज़ी" हदीस सं. 2364।
(3) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2082 और "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 6456।
(4)"सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 2739 और "मुसनद अहमद" हदीस सं. 17990। .

अध्याय 1 इस्लाम के सत्य धर्म होने के कुछ प्रमाण

क्या यह बात संभव है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पैग़म्बरी का दावा मान-सम्मान, धन-संपत्ति और शक्ति के लिए किया था? मान-सम्मान और शक्ति की इच्छा अनेकों प्रकार के स्वादिष्ट खानपान, पहनावा, वस्त्र, विशाल महलों, तरह-तरह की रक्षक सैनिकों और निर्विवाद शासनाधिकार के साथ संबंधित होती है। क्या इनमें से कोई भी बात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में पाई जाती है? नीचे उनके जीवन की कुछ झलकियों से इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करते हैं:

एक पैग़म्बर, शिक्षक, शासक और न्यायधीश के दायित्व का पालन करते हुए भी मुहम्मद सल्लाल्लाल्हु अलैहि व सल्लम अपनी बकरी का दूध खुद निकालते थे,[1] अपने फटे हुए जूतों की मरम्मत खुद ही करते थे,[2],घर के कामकाज में सहयोग करते थे[3], और गरीब व्यक्तियों की खोज-खबर में आप खुद जाते थे जब वह बीमार होते[4]. वह अपने साथियों का ख़ंदक़ खोदने एवं मिट्टी हटाने में भी सहयोग करते थे[5]। उनका जीवन सरलता और विनम्रता का बेमिसाल नमूना था।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी आपसे अत्यंत प्रेम करते थे, आपका सम्मान करते थे और आपके ऊपर गज़ब का विश्वाश रखते थे। लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सदा इस बात पर जोर देते थे कि इबादत तथा भक्ति केवल एक अल्लाह की होनी चाहिए, न कि स्वयं उनकी। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक साथी अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने, आपसे जितनी मुहब्बत की उससे अधिक मुहब्बत किसी और से नहीं की। लेकिन वे किसी के आने पर खड़े नहीं होते थे, क्योंकि आपको यह पसंद नहीं था कि लोग आपके आगमन पर सम्मान में खड़े हों, जैसा कि अन्य समुदायों के लोग अपने बड़ों के साथ किया करते हैं।"[6] .

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथियों पर अत्यंत अत्याचार तथा भीषण एवं असहनीय यातनाओं का दौर चलते समय, जबकि इस्लामिक आह्वान की सफलता के कोई लक्षण नहीं थे, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक ललचाने वाला प्रस्ताव रखा गया। अधर्मियों के नेता उत्बा के नेतृत्व में एक समूह आपके पास आया और कहा कि "अगर तुमको संपत्ति चाहिए, तो बोलो, हम तुम्हारे लिए इस क़दर धन-संपत्ति जमाकर देंगे कि तुम अरब के सबसे बड़े धनवान बन जाओगे, यदि तुम हमारे नेता बनना चाहते हो, तो हम सब तुमको अपना नेता मानने को तैयार हैं तथा हम तुम्हारे नेतृत्व में काम करने

---

(1)"मुसनद अहमद" हदीस सं. 25662।
(2) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 676 और "मुसनद अहमद" हदीस सं. 25517।
(3) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 676 और "मुसनद अहमद" हदीस सं. 23706।
(4) "मुवत्ता मालिक" हदीस सं. 571।
(5) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 3034 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 1803 तथा "मुसनद अहमद" हदीस सं. 18017। .
(6) "मुसनद अहमद" हदीस सं. 12117 और "सुन अल-तिर्मिज़ी" हदीस सं. 2754।

को भी तैयार हैं और तुम्हारी सहमति के बिना हम कोई भी निर्णय नहीं लेंगे। यदि तुमको बादशाहत चाहिए, तो हम तुमको अपना बादशाह स्वीकार करने को तैयार हैं।"

इन तमाम प्रस्तावों का केवल एक ही उद्देश्य था कि आप एकेश्वरवाद का आह्वान और उसकी तरफ लोगों को बुलाना छोड़ दें।

लेकिन क्या यह लुभावना प्रस्ताव विश्व उन्नति के लिए काम करने वाले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊपर कुछ असर डाल सका? या आपने इससे बेहतर विकल्प के लिए रास्ता खुला रखा? या मोल तोल की नीति अपनाई? आपका उत्तर सुनिए! आपने कहा : "अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ, जो कृपाशील और अत्यंत दयालु है।" उसके बाद आपने उत्बा के सामने सूरा फुस्सिलात की शुरू की आयतें पढ़ीं [1] । उनमें से कुछ आयतों का अर्थ कुछ इस तरह है :

﴾हा मीम, अवतरित है अत्यंत कृपालु एवं अत्यंत दयालु की ओर से। यह एक ऐसी किताब है, जिसकी आयतों की स्पष्ट व्याख्या की गई है, कुरआन अरबी भाषा में है, उस समुदाय के लिए जो जानता है। शुभ सूचना सुनाने वाला तथा चेतावनी देने वाला है। फिर भी उनके अधिकतर लोग विमुख हो गए तथा वे सुनते ही नहीं।﴿ (कुरआन, 41:1-4)

एक अन्य अवसर पर अपने चाचा के इस प्रस्ताव के उत्तर में कि आप लोगों को इस्लाम की तरफ बुलाना बंद कर दें, आपका उत्तर निर्णायक और सच्चा था : "अल्लाह की क़सम काका! मैं इस (लोगों को इस्लाम की ओर बुलाने के) काम से कभी भी विमुख होने वाला नहीं हूँ, चाहे वे मेरे एक हाथ में सूर्य और दूसरे हाथ में चन्द्रमा ही क्यों न रख दें। मैं इस काम को जारी रखूँगा यहाँ तक कि अल्लाह मुझे इसमें पूर्ण सफ़लता प्रदान कर दे, चाहे मेरा नाश ही क्यों न हो जाए[2]।"

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके कुछ अनुयायी न केवल 13 वर्षों तक भयंकर यातना सहते रहे, बल्कि कई बार उनको जान से मार डालने का दुष्प्रयत्न भी किया गया। एक बार एक भारी पत्थर फेंककर आपका सर फोड़ देने का प्रयत्न किया गया[3]। एक बार खाने में विष देकर मारने का षड्यंत्र किया गया[4]।

क्या यह सब लक्षण शक्ति के भूखे, आत्म केंद्रित आदमी और स्वार्थी व्यक्ति के हो सकते हैं? दुश्मनों पर पूर्ण विजय प्राप्ति के बाद भी इस तरह के कष्टदायक और बलिदानयुक्त जीवन का औचित्य क्या हो सकता है? सम्पूर्ण विजय प्राप्ति के बाद गौरवमय क्षणों में भी अति विनम्रता व्यक्त

---

(1) "सीरत नबवियह" इब्न-ए-हिशाम, खंड 1, पृ. 293- 294।
(2) "सीरत नबवियह" इब्न-ए-हिशाम, खंड 1, पृ. 265 -266।
(3) "सीरत नबवियह" इब्न-ए-हिशाम, खंड 1, पृ. 298 -299।
(4) "अल-दारिमी", हदीस सं. 68 और "सुनन अबू दाऊद" हदीस सं. 4510।

अध्याय 1 इस्लाम के सत्य धर्म होने के कुछ प्रमाण

करते हुए कहे गए इस कथन "यह बिजय अल्लाह की सहयाता से प्राप्त हुई है, मेरी कुशलता से नहीं" की व्यख्या किस तरह की जा सकती है?

(7) इस्लाम का आश्चर्यजनक विस्तार

इस अध्याय के अंत में इस्लाम की सत्यता के एक महत्पूर्ण प्रमाण की ओर इशारा करना उचित होगा। यह एक विख्यात तथ्य है कि अमेरिका एवं पूरे विश्व में इस्लाम सबसे तीव्र गति से फ़ैलने वाला धर्म है। इस प्रक्रिया के संबंध में कुछ टिप्पणियाँ विचारणीय हैं :

- अमेरिका में इस्लाम सबसे तीव्र गति से फ़ैलने वाल धर्म है। यह धर्म हमारे बहुत सारे लोगों के लिए मार्गदर्शक और आस्था-स्तम्भ प्रमाणित हुआ है। (Hilary Rodham Clinton, Las Angelas Times) [(1)].
- "मुसलमान विश्व में सबसे अधिक तेजी के साथ फैलने वाला समुदाय है।" (The population reference bureau, USA Today)[(2)] ।.
- "इस्लाम देश का सबसे अधिक तेज गति से फैलने वाला धर्म है।" (Geraldine Boum, न्यूज़ डे धर्म केंद्रित लेखक, न्यूज़ डे)[(3)]।
- "इस्लाम अमेरीका का सबसे अधिक तेज गति से फैलने वाला धर्म है।" (Ari L. Goldman, न्यूयॉर्क टाइम्स)[(4)].

इन विचारों से पता चलता है कि वास्तव में इस्लाम एक सत्य ईश्वरीय धर्म है, जो अल्लाह द्वारा अवतरित किया गया है। यह सोचना बिल्कुल भी अनुचित होगा कि अमेरीका एवं विभिन्न देशों के इतने सारे लोगों ने बिना सोच विचार के इस्लाम स्वीकार कर लिया, बिना यह ज़ाने कि इस्लाम ही सच्चा धर्म है। यह धर्मान्तरण विभिन्न देशों, नस्लों, वंशों, तबकों, धर्मों एवं जातियों से हुआ है, जिनमें बड़े-बड़े ज्ञानी, वैज्ञानिक, विद्वान, प्रोफेसर, दार्शनिक, पत्रकार, राजनेता, कलाकार एवं एथलीट शामिल हैं। क्या यह एक संयोग है? कभी नहीं! बल्कि यह इस्लाम की सत्यता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

इस अध्याय में उल्लिखित तमाम तथ्य इस बात के अनेकों प्रमाणों में से कुछ बूँद भर हैं कि कुरआन अल्लाह की वाणी, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर और इस्लाम अल्लाह का सच्चा धर्म है।

❁ ❁ ❁

(1) Larry B. Stammer, Times Religion Writer, "First Lady Breaks Ground with Muslims" Los Angels Times, Home Edition, Metro Section, Part B, May 31, 1996, page. 3

(2) तीमोथ कैनी, “एल्स व्हुयर इन द वल्ड”, USA Today, Final Edition, News Section, February 17, 1989, page 4A.

(3) गेराल्ड, “For Love of Allah”. News Today, Nassau and Suffolk Edition, part 2, March 7, 1989, page. 4

(4) Ari L. Goldman "Mainstream Islam Rapidly Embraced by Black Americans, “New York Times”, Late City Final Edition, Feb. 21,1989, page 1

अध्याय 2

इस्लाम के कुछ फायदे

इस्लाम से व्यक्ति तथा समाज को अनेकों फायदे हैं। इस अध्याय में व्यक्ति को प्राप्त होने वाले कुछ लाभों का उल्लेख किया गया है।

(1) अनंत स्वर्ग की प्राप्ति

महान अल्लाह ने कुरआन में फ़रमाया है :

﴾और ईमान वालों और सुकर्म करने वालों को, उन स्वर्गों की शुभ सूचना दे दो, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं ....।﴿ (कुरआन , 2:25)

एक अन्य स्थान में फ़रमाया है :

﴾(आओ) दौड़ो अपने पालनहार की क्षमा की ओर तथा उस स्वर्ग की ओर, जिसका विस्तार आकाश एवं धरती के विस्तार के बराबर है। यह उन लोगों के लिए बनाया गया है, जो अल्लाह पर तथा उसके रसूलों (संदेशवाहकों) पर ईमान रखते हैं ......।﴿ (कुरआन , 57:21)

तथा पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि स्वर्ग की सबसे निम्न श्रेणी का वासी भी इस संसार के दस गुना से अधिक पाएगा,[1]। और वह वहाँ वही पाएगा जो वह इच्छा करेगा और उससे भी दस गुना ज्यादा पाएगा.[2] ।मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी कहा है:

"स्वर्ग का एक धनुष रखने के बराबर स्थान इस संसार और इस संसार में जो कुछ है, उससे उत्तम है।"[3] आपने यह भी कहा है :"स्वर्ग में ऐसी-ऐसी चीजें हैं जिन्हें किसी आँख ने देखा नहीं है, किसी कान ने उनके बारे में सुना नहीं है और किसी मानव बुद्धि ने उनकी कल्पना भी नहीं की है(4)[4] ।" आपका यह भी कहना है : "इस संसार के सबसे ज्यादा दुखी और कष्ट भोगने वाले व्यक्ति को एक बार स्वर्ग में डुबकी लगवाकर पूछेगा कि ऐ आदम की संतान! क्या तुमने कभी कोई दुःख भोगा है? क्या तुमने कभी कोई कष्ट उठाया है? उसका उत्तर होगा: "नहीं, अल्लाह की क़सम मैंने आज तक कोई दुःख नहीं देखा और मैंने आज तक किसी भी कष्ट का अनुभव नहीं किया।"[5]

---

(1) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 186 और "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 6571।
(2) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 188 और "मुसनद अहमद" हदीस सं. 10832।
(3) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 6568 और "मुसनद अहमद" हदीस सं. 13368।
(4) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2825 तथा "मुसनद अहमद" हदीस सं. 8609।
(5) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2807 तथा "मुसनद अहमद" हदीस सं. 12699।

अगर आप स्वर्ग में एक बार प्रवेश करने में सफल हो गए, तो आपका जीवन अति आनंदमय होगा तथा उसे मृत्यु, रोग, दुःख या कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा। अनंत जीवन प्राप्त होगा। अल्लाह ने कुरआन में कहा है :

﴾और जिसने विश्वाश किया और सत्कर्म किया, उन्हीं लोगों को हम स्वर्ग में प्रवेश कराएँगे, जिसमें नदियाँ बह रही होंगी, उसमें वे लोग सदैव रहेंगे।...﴿ (कुरआन , 4:57)

मौत के बाद के जीवन या जन्नत के बारे में अधिक जानने के लिए www.islam-guide.com/hereafter पर लॉग इन करें।

(2) नरक से मुक्ति

कुरआन में उल्लिखित है :

﴾नि:संदेह जो लोग काफिर हुए और कुफ्र (अविश्वाश) की हालत में ही उनकी मौत हो गई, तो यदि वह धरती भर सोना (स्वर्ण) भी मुक्ति धन के तौर पर दें, तो भी कदापि स्वीकार न होगा। इन्हीं लोगों के लिए दुखद यातना है और उनका कोई सहायक नहीं होगा।﴿ (कुरआन , 3:91)

अर्थात स्वर्ग की प्राप्ति का एक ही मार्ग है। वह यह है कि आदमी इस संसार में मरने से पहले विश्वाशियों के साथ हो जाए, क्योंकि मरने के बाद दोबारा यह मौका नहीं मिलेगा। जैसा कि महान अल्लाह ने कहा है कि क़यामत के दिन अविश्वाशियों के साथ क्या होगा :

﴾तथा यदि आप उस समय देखें, जब ये लोग नरक के निकट खड़े किए जाएँगे और कहेंगे : हाय! क्या ही अच्छी बात होती कि हम फिर वापस भेज दिए जाते (तथा यदि ऐसा हो जाए) तो हम अपने प्रभु की निशानियों को न झुठलाते तथा हम ईमान वालों में से हो जाते।﴿ (कुरआन , 6:27)

लेकिन यह दूसरा मौक़ा किसी को भी नहीं मिलेगा।

संदेशवाहक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है : "नरक में प्रवेश करने वाले एक व्यक्ति को जिसने संसार में सबसे अच्छा तथा सुखमय जीवन बिताया होगा, नरक में डुबकी लगवाया जाएगा। फिर

उससे प्रश्न किया जाएगा कि क्या तुमने कभी संसार में सुख भी देखा है? कभी आनंद का अनुभव किया है? वह कहेगा : कभी भी नहीं मेरे प्रभु! तेरी क़सम है।"[1]

(3) वास्तविक आनंद और आंतरिक शांति की प्राप्ति

वास्तविक आनंद और शांति इस संसार के रचनाकार और प्रतिपालक की भक्ति और उसकी इबादत से ही प्राप्त की जा सकती है। अल्लाह ने क़ुरआन में कहा है:

﴾याद रखो कि अल्लाह के सत्य दिल से स्मरण से ही हृदय को शांति प्राप्त होती है।﴿
(क़ुरआन , 13:28)

जबकि दूसरी तरफ अगर कोई क़ुरआन से दूर भागेगा(7) [2], तो उसको इस संसार में कष्टदायक जीवन मिलेगा।

महान अल्लाह का कथन है :

﴾तथा जो मेरी याद से मुख फेरेगा, उसका जीवन तंग होगा तथा हम उसे क़यामत के दिन अंधा करके उठाएँगे।﴿
(क़ुरआन , 20:124)

कभी-कभी कोई धन-संपत्ति वाला एवं सुखी-संपन्न व्यक्ति भी सांसारिक मौज-मस्ती का जीवन तथा ऐश-व-आराम पाने के बावजूद आत्महत्या करके अपना प्राण गँवा देता है। उसका कारण ऊपर की आयत से कुछ हद तक समझ में आता है। उदाहरण के लिए कैट स्टीवंस (यूसुफ़ इस्लाम) को लीजिए। वह पहले एक विश्व प्रसिद्ध पोप सिंगर थे और कभी-कभी एक रात की उनकी आमदनी 1,50,000 यु.एस. डालर तक हुआ करती थी। पर शांति नहीं थी। इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद उसने ऐसे आनन्दमय एवं शांतिमय जीवन का अनुभव किया, जो कभी उसे पहले नहीं मिला था। [3].

---

(1) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2807 तथा "मुसनद अहमद" हदीस सं. 12699। .

(2) न कुरआन पर ईमान रखेगा और न उसके आदेशों का पालन करेगा।

(3) यदि आप यूसुफ इस्लाम के मुसलमान होने के अनुभव को अधिक जानना चाहते हैं, तो उनका वर्तमान पता है "2 Digswell Street, London N7 8JX, United Kingdom".

अध्याय 2
इस्लाम के कुछ फायदे

इस्लाम अपनाने वाले लोगों की आप बीती जानने हेतु www.islam-guide.com/stories पर लॉग इन करें या "Why is Our Only Choice".[1] नामी किताब को वेब पेज पर पढ़ें। इस किताब में इन लोगों के, जो भिन्न देशों, तबकों एवं पृष्ठभूमियों से संबंध रखते हैं, अनुभवों एवं विचारों को पढ़ सकते हैं।

(4) पूर्व के सभी पापों की क्षमा

जब कोई व्यक्ति इस्लाम स्वीकार कर लेता है, तो अल्लाह उसके सारे पुराने पापों एवं गुनाहों को क्षमा कर देता है। अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आएँ और बोले : "आप अपना दायाँ हाथ दीजिए, ताकि मैं अल्लाह की शपथ उठाकर आपके हाथ पर बैअत करूँ और अपनी वफ़ादारी का प्रदर्शन करूँ।" आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपना दायाँ हाथ आगे बढ़ाया, तो अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपना हाथ खींच लिया। अलल्ह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पूछा : "यह क्या है?" अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा : "एक शर्त रखना चाहता हूँ।" आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : "तुम्हारी शर्त क्या है?" अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा : "अल्लाह मेरे सब पाप क्षमा कर दे।" यह सुन आपने कहा : "क्या तुमने सुना नहीं कि जो व्यक्ति इस्लाम ग्रहण करता है, अल्लाह उसके सब पुराने पापों को क्षमा कर देता है?"[2]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस के अनुसार इंसान इस्लाम ग्रहण कर लेने के बाद के अपने अच्छे या बुरे कर्मों की कसौटी पर ही तोला जाएगा। अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है : "तुम लोगों का प्रभु बहुत ही दयावान है, यदि किसी व्यक्ति ने सत्कर्म करने की इच्छा की और उसने वह काम नहीं किया, फिर भी उसको उसका पुण्य मिलता है। यदि उसने उसको कर लिया तो उसको उसका पुण्य दस से लेकर सात सौ गुना अथवा उससे भी अधिक मिलता है। लेकिन यदि किसी ने कोई बुरा काम करने की नीयत की, फिर उसने उसे नहीं किया, तो उस बुरे काम से रुकने की वजह से उसके खाते में एक पुण्य लिख दिया जाता है। यदि उसने कर लिया, तो उसके बुरे काम के अनुपात में उसका पाप लिखा जाता है, लेकिन अल्लाह उसको भी मिटा सकता है।"[3]

(1) यह किताब मुहम्मद एच. शाहिद की है। इसकी कॉपी के लिए लॉग इन करें www.islam-guide.com/stories या 69- 70 पेज में दिए गए किसी संगठन से संपर्क करें।

(2) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 121 तथा "मुसनद अहमद" हदीस सं. 17357। .

(3) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 131 तथा "मुसनद अहमद" हदीस सं. 2515। .

अध्याय 3

इस्लाम के संबंध में सामान्य जानकारियाँ

(1) इस्लाम क्या है?

इस्लाम धर्म : पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा लाई हुई अल्लाह की शिक्षाओं का पूर्ण रूप से पालन करने तथा उन्हें स्वीकार करने का नाम इस्लाम है। इस्लाम का दूसरा अर्थ शांति भी है।

(2) इस्लाम की मूलभूत आस्थाएँ

क. अल्लाह पर ईमान

एक मुसलमान एक ऐसे अल्लाह पर विश्वास रखता है, जो एक है और जिसका कोई साझी एवं कोई संतान नहीं है। वही सत्य पूज्य तथा एकमात्र उपास्य है और उसके सिवा कोई उपासना योग्य नहीं है। उसके बहुत-से अच्छे-अच्छे नाम तथा संपूर्ण गुण एवं विशेषण हैं। उसके पूज्य होने तथा उसके गुणों में उसका कोई साझी नहीं है। अल्लाह ने क़ुरआन में स्वयं अपने बारे में बताया है:

﴾आप कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह किसी के अधीन नहीं तथा सभी उसके अधीन हैं। न उससे कोई पैदा हुआ है, न उसे किसी ने पैदा किया है तथा न कोई उस जैसा (उसका समकक्ष) है।﴿ (कुरआन , 112:1 -4)

अल्लाह के अलावा कोई भी विनती किए जाने, प्रार्थना किए जाने या इबादत किए जाने के योग्य नहीं है।

यह कुरआन की 112वीं सूरा का अरबी सुलेख है।

इस ब्रह्मांड और ब्रह्मांड के अंदर जो कुछ भी है, सब को उसी ने पैदा किया है और वही प्रभु, निर्वाहक तथा सबका पालनकर्ता है। वही सब चीजों का व्यवस्थापक है। उसने जो कुछ भी सृष्टि की है, उनमें से वह किसी भी चीज का मोहताज नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की हर चीज़ उसका मोहताज है। वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला, हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला तथा सब का मालिक है। उसका ज्ञान सर्वव्यापी है। वह खुला और छिपा, सार्वजनिक और व्यक्तिगत सबको जानता है। उसकी इच्छा और स्वीकृति के बिना इस संसार में कोई काम या घटना नहीं होती। वह जो चाहता है, वही होता है। जो नहीं चाहता, वह नहीं होता है और न कभी हो सकता है। उसकी इच्छा सृष्टि में सबकी इच्छा से ऊपर है। सब चीजों पर उसी का अधिकार है। वह जो चाहे कर सकता है। वह सबसे अधिक दयालु, सबसे अधिक कृपाशील, सबसे अधिक उपकारी है। शंदेश्वाहक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: "अल्लाह हम लोगों पर हमारी माताओं से भी अधिक दयावान है।"[1]. अल्लाह अन्याय और अत्याचार से पाक है। वह जो करता है और जिन चीजों का आदेश देता है, वह सब बुद्धिमत्तापूर्ण होता है। यदि किसी को कोई चीज़ माँगनी है, तो बिना किसी माध्यम के सीधा उसी से माँग सकता है। अल्लाह से सहायता माँगने के लिए बीच में किसी भी वास्ता और मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है। न अल्लाह यशु है और न ही यशु अल्लाह[2].। यशु ने खुद ही अपने अल्लाह होने का खंडन किया है। जैसा कि अल्लाह ने क़ुरआन में फरमाया है:

﴿वह लोग काफिर हो गए, जिन्होंने कहा कि मरयम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है, जबकि मसीह ने (स्वयं) कहा है कि हे इस्राईल की संतानों! मेरे पालनहार तथा अपने पालनहार, केवल अल्लाह की इबादत करो, क्योंकि जो अल्लाह के साथ शिर्क करता है, अल्लाह उसपर स्वर्ग हराम कर देता है तथा उसका ठिकाना नरक है, एवं अत्याचारियों (अनेकेश्वरवादियों) का कोई सहायक न होगा।﴾ (क़ुरआन , 5:72)

---

(1) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 5999 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2754।

(2) एसोसिएट प्रेस, लंदन ने 25 जून 1984 को रिपोर्ट की थी कि लंदन विकेंड टेलीविज़न के हफतावारी धार्मिक प्रोग्राम "क्रेडो" के सर्वे के अनुसार अंग्रेज़ बिशप्स की बहुमत 39 में से 31 ने कहा है कि ईसाइयों के लिए ईसा को भगवान मानना जरूरी नहीं है और 31 में से 19 बिशप्स के अनुसार ईसा को अल्लाह का सुप्रीम एजेंट मानना काफी है।

अल्लाह तीन में से एक नहीं है। अल्लाह क़ुरआन में कहता है:

﴾वह लोग भी पूर्ण रूप से काफिर हो गए, जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है। वास्तव में अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं। तथा यदि वह लोग अपने कथन से न रुके, तो उनमें से जो कुफ्र में रहेंगे, उन्हें कठोर यातनाएँ अवश्य पहुँचेंगी। यह लोग महान अल्लाह की ओर क्यों नहीं लौटते तथा क्यों नहीं क्षमा-याचना करते? (महान) अल्लाह अत्यधिक क्षमाशील तथा अत्यधिक कृपालु है। मरयम का पुत्र मसीह मात्र पैगम्बर होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। उससे पूर्व भी बहुत-से पैग़म्बर हो चुके हैं। उसकी माता एक पवित्र एवं सत्यवती स्त्री थी। दोनों (माता-पुत्र) भोजन किया करते थे। आप देखिए कि हम किस प्रकार उनके समक्ष तर्क प्रस्तुत करते हैं। फ़िर विचार कीजिए कि वे किस प्रकार झूठ गढ़ते हैं।﴿ (क़ुरआन , 5: 73-75)

इस्लाम इस तरह के विश्वासों को सिरे से नकारता है कि अल्लाह ने सृष्टि की रचना के सातवें दिन आराम किया, उसने अपने किसी फरिश्ते से कुश्ती की, वह द्वेष रखता है, वह इंसान के खिलाफ साज़िश करता है, वह किसी भी चीज़ में समा जाता है। इस्लाम इन आस्थाओं को भी नकारता है किसी भी इंसानी शक्ल को अल्लाह की तरफ मंसूब किया जाए। यह तमाम चीजें कुफ्र हैं। अल्लाह इन सब से बरतर है। वह तमाम कमियों से पाक है। वह न थकता है और न उसे ऊँघ या नींद आती है।

"अल्लाह" अरबी काशब्द है, जिसका अर्थ है ईश्वर। (इससे अभिप्राय केवल एक सत्य अल्लाह है, जो इस ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता है।) यह शब्द केवल एक माबूद, एक पूज्य एवं एक पालनहार के लिए इस्तेमाल होता है। इसे मुसलमान व ईसाई सब इस्तेमाल करते हैं। इस शब्द का स्त्री लिंग और बहुवचन भी नहीं है। केवल एक सच्चा ईश्वर। क़ुरआन में अल्लाह का शब्द 2150 से अधिक बार प्रयोग किया गया है।

ख. फ़रिश्तों पर आस्था

सभी मुसलमान फरिश्तों के वजूद पर आस्था रखते हैं और यह मानते हैं कि वे अल्लाह की सम्मानित सृष्टि हैं। वे केवल अल्लाह की भक्ति करते हैं, उसका आज्ञापालन करते हैं, उसी के आदेश अनुसार काम करते हैं तथा उसकी शिक्षाओं का उलंघन नहीं करते। उन फरिश्तों में से एक जिब्रील हैं, जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास क़ुरआन लेकर आए।

ग. आसमानी किताबों पर ईमान

तमाम मुसलमान इस बात पर भी आस्था रखते हैं कि महान अल्लाह ने मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए अपने संदेशवाहकों पर आसमानी किताबें अवतरित कीं। उन किताबों में से एक कुरआन भी है, जो अंतिम किताब है और जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुई, उसकी रक्षा का जिम्मा अल्लाह ने खुद अपने ऊपर ले रखा है। अल्लाह ने कहा है:

﴾निःसंदेह हमने ही कुरआन को अवतरित किया और हम ही उसकी रक्षा करने वाले हैं।﴿(कुरआन, 15:9)

घ. अल्लाह के संदेशवाहक पर ईमान

सब मुसलमान इस बात पर भी आस्था रखते हैं कि अल्लाह ने अपने कुछ बंदों को अपना संदेशवाहक बनाया है। कुछ संदेशवाहकों के नाम इस प्रकार हैं : आदम, नूह, इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याकूब, मूसा (Moses) और ईसा (Jesus) (इन सभी पर अल्लाह की शांति एवं दया हो।) लेकिन मानव जाति के लिए अल्लाह का अंतिम संदेश मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा लाया गया, जो सनातन संदेश का पुष्टिकरण भी है। सब मुसलमानों की आस्था है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अन्तिम संदेशवाहक हैं। अल्लाह ने कहा है:

﴾(लोगो), मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुममें से किसी के पिता नहीं हैं, परन्तु आप महान अल्लाह के रसूल हैं तथा समस्त नबियों में अंतिम हैं।..﴿ (कुरआन , 33:40)

मुसलमानों का विश्वास है कि संदेशवाहक सभी के सभी मानव ही थे तथा उनमें से किसी में भी ईश्वरीय गुण नहीं थे।

ङ. फैसले के दिन पर ईमान

मुसलमानों की आस्था है कि एक दिन पुनर्जन्म होगा और अल्लाह आस्था और कर्म के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति को पुरस्कृत अथवा दंडित करेगा।

च. भाग्य पर ईमान

मुसलमानों का भाग्य पर भी विश्वाश है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि मानव को इच्छा और कार्य-स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं है। मुसलमानों का विश्वास है कि मानव को इच्छा तथा चयन का सामर्थ्य

प्राप्त है तथा वह सही एवं गलत में किसी एक का चयन कर सकता है और वही उसका ज़िम्मेवार भी होगा।

भाग्य और तक़दीर पर आस्था का अर्थ चार चीजों पर विश्वास रखना है। (1) अल्लाह को सब चीजों का ज्ञान है। क्या घट चुका है, उसको उसका ज्ञान है तथा भविष्य में क्या घटने वाला है, वह भी उसको पता है। (2) अल्लाह ने जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होने वाला है, सबको लिख रखा है। (3) अल्लाह जो चाहता है, वही होता है और जो वह नहीं चहता, वह कभी नहीं होता। (4) अल्लाह ही सभी चीजों का पैदा करने वाला है।

इस्लामी आस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया www.islam-guide.com/beliefs पर पधारें।

(3) क्या क़ुरआन के अलावा इस्लाम का कोई अन्य विधि-स्रोत है?

इस्लामिक ज्ञान का दूसरा स्रोत सुन्नत है। (इससे अभिप्राय वह बातें हैं, जो पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहीं, या वह कार्य हैं, जिन्हें उन्होंने किया या फिर जिन्हें स्वीकृति प्रदान की।) यह इस्लाम का दूसरा स्रोत है। सुन्नत संदेशवाहक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के उन कामों, कथनों या सहमतियों को सम्मिलित है, जिनको उनके साथियों ने अत्यन्त विश्वसनीय तरीके से हम तक पहुँचाया है। सुन्नत पर विश्वास इस्लाम की मूल आस्थाओं में से है।

(4) संदेशवाहक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कुछ कथन

- **"अल्लाह पर ईमान रखने वाले एक दूसरे से प्यार, हमदर्दी और मेहेरबानी के मामले में इंसानी शरीर की तरह हैं, यदि उसमें से कोई अंग बीमार होता है तो पूरा शरीर उसके इस कष्ट, तकलीफ और बुखार को महसूस करता है।"**[(1)]
- **"तुममें से सबसे बेहतर मोमिन वह है, जिसके चरित्र सबसे बेहतर हैं, और सबसे अच्छा वह व्यक्ति है, जिसका व्यहार अपनी पत्नी के साथ सबसे अच्छा हो।"**[(2)]
- **"तुम लोग उस समय तक पूर्ण रुप से मोमिन नहीं हो सकते, जब तक कि तुम अपने भाइयों के लिए वही पसंद न करो, जो अपने लिए करते हो।"**[(3)]
- **रहमदिल पर अल्लाह रहम करता है। तुम जमीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुमपर रहम करेगा।"**[(4)]

---

(1) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 6011 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2586।
(2) "मुसनद अहमद" हदीस सं. 7354 और "तिर्मिज़ी" हदीस सं. 1162।
(3) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं.13 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 45।
(4) "सुनन तिर्मिज़ी" हदीस सं. 1924 और "सुनन अबू दाऊद" हदीस सं. 4941।

- **"अपने भाइयों की तरफ मुस्कुराकर देखना सदका (दान) है।"[1]**
- **"मीठा बोल सदका है।"[2]**
- **"जो अल्लाह और फैसले के दिन (क़यामत) पर विश्वास रखता हो, वह अपने पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करे।"[3]**
- **"अल्लाह तुम्हारा मूल्यांकन तुम्हारे रंग, रूप और सम्पति से नहीं करेगा, बल्कि तुम्हारे मन और कर्मों को देखकर करेगा।"[4]**
- **"मजदूर की मजदूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो।"[5]**
- **"यात्रा करते हुए एक आदमी को प्यास लगी। उसको एक कुआँ मिला। वह उसमें उतरा और पेट भर पानी पिया। वह बाहर निकला था कि वहाँ उसने एक प्यासे कुत्ते को देखा कि वह प्यास के कारण मिट्टी चाटकर अपनी प्यास बुझाने का प्रयास कर रहा है। उसने सोचा कि कुत्ते को भी मुझ जैसी प्यास लगी है। वह फिर कुएँ के अंदर गया और अपने जूते में पानी भरकर लाया और उस कुत्ते को पिला दिया। उसकी वजह से अल्लाह ने उसका धन्यवाद किया और उसके पापों को क्षमा कर दिया। संदेश्वाहक से प्रश्न किया गया : ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जानवर पर दया करने पर भी पुण्य मिलेगा? उन्होंने कहा: "प्रत्येक जीवित प्राणी, मनुष्य हो कि जानवर, पर दया करने पर पुण्य मिलेगा।"[6]**

(5) न्याय के दिन के बारे में क़ुरआन क्या कहता है?

ईसाइयों की तरह मुसलमानों की भी यह आस्था और विश्वास है कि सांसकारिक जीवन एक परीक्षा है, जिसमें मानव पुनर्जन्म की तैयारी कर रहा है। एक दिन ऐसा आएगा, जिसमें हर चीज़ ध्वस्त हो जाएगी और हर प्राणी को मरना होगा, फिर उसके बाद पुनर्जन्म होगा और सब लोग न्याय के लिए अल्लाह के सामने लाए जाएँगे, उसके बाद का जीवन अनंत होगा। उसी को "न्याय का दिन" कहते हैं। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म के अनुसार पुरुस्कार अथवा दंड पाएगा। जो लोग इस बात पर आस्था रखते हैं कि अल्लाह ही पूज्य है, और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके संदेश्वाहक हैं, और मृत्यु के बाद दोबारा उठाए जाएँगे और वह अल्लाह के लिए आत्म समर्पित किए हुए होंगे, तो यही लोग स्वर्ग में जाएँगे। अल्लाह का कथन है:

﴾तथा जो लोग ईमान लाए एवं सदाचार किए वे स्वर्गवासी हैं। वे सदैव स्वर्ग में रहेंगे।﴿ (क़ुरआन, 2:82)

---

(1) "सुनन तिर्मिज़ी" हदीस सं. 1956।
(2) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 2989 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं.1009।
(3) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 6019 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 48।
(4) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2564।
(5) "सुनन इब्न-ए-माजा" हदीस सं. 2443।
(6) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 2466 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2244।

लेकिन जो लोग इस अवस्था में मरेंगे कि उनका इस बात पर ईमान नहीं होगा कि "अल्लाह के अलावा कोई भक्तियोग्य नहीं है तथा मुहम्मद अल्लाह के संदेशवाहक हैं", तथा न्याय के दिन पर उनका विश्वास नहीं होगा, तो उनका ठिकाना नरक होगा और वे सदा उसमें रहेगें। अल्लाह की शुभवाणी है:

﴾और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म को मानेगा, उसका धर्म मान्य नहीं होगा और वह परलोक (आखिरत) में क्षति उठाने वालों में होगा।﴿ (क़ुरआन, 3:85)

उसका यह भी कहना है :

﴾नि:सन्देह जो लोग काफिर हुए और मरते समय तक विश्वासरहित रहे, उनमें से यदि कोई धर्ती भर सोना (स्वर्ण) दे दे, तो भी कदापि स्वीकार्य न होगा। इन्हीं के लिए दुखद यातना है और उनका कोई सहायक नहीं।﴿ (क़ुरआन, 3:91)

कोई सवाल कर सकता है कि मैं इस्लाम को सही धर्म समझता हूँ, परन्तु यदि मैंने इस्लाम कबूल किया तो मेरे ख़ानदान, दोस्त एवं दूसरे लोग मुझे यातना देंगे और मेरा मजाक उड़ाएँगे। ऐसी स्थिति में यदि मैं इस्लाम कबूल न करूँ, तो क्या जन्नत में जाऊँगा और जहन्नम से निजात पा सकूँगा?

इसका उत्तर पूर्व की क़ुरआनी आयत में है, जिसमें अल्लाह ने कहा है कि **"और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म को मानेगा, उसका धर्म मान्य नहीं होगा और वह परलोक (आखिरत) में क्षति उठाने वालों में होगा।" (क़ुरआन, 3 : 85)** जब अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस्लाम की तरफ बुलाने भेजा, तो उसके बाद कोई दूसरा धर्म मान्य नहीं होगा। अल्लाह ही हमारा पैदा करने वाला और पालनहार है। उसी ने पृथ्वी में हर चीज़ को पैदा किया है। हर अच्छी चीज़, जो हमारे पास है, उसी की है। इन तमाम बातों के बावजूद यदि कोई व्यक्ति अल्लाह, उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उसके धर्म इस्लाम पर ईमान को ठुकराता है, तो इंसाफ यह है कि उसको आख़िरत में सज़ा मिले। क्योंकि हमारी पैदाइश का पहला और एकमात्र उद्देश्य एक अल्लाह की इबादत और उसके निर्देशों का अनुपालन है। क़ुरआन में है: **मैंने जिन्न और इंसान को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। (क़ुरआन, 51- 56)**

यह ज़िंदगी बहुत छोटी है और अविश्वासी लोग क़यामत के दिन जान जाएँगे कि जमीन पर उन्होंने जो जीवन बिताए हैं, वह मात्र एक दिन या कुछ छण के लिए था। अल्लाह ने कहा है:

﴾जब अल्लाह उनसे सवाल करेगा कि "तुम जमीन पर कितने वर्ष रहे?" तो वह कहेंगे : "एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा...।﴿ (क़ुरआन , 23:112 -113)

आगे कहा है :

﴾क्या तुम यह समझते हो कि हमने तुम को यूँ ही पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ लौटाए नहीं जाओगे? अल्लाह बुलंदतरीन, हर चीज़ का मालिक और सत्य है। वही पूजनीय और पवित्र अर्श का रब है।﴿ (क़ुरआन , 23:115 -116)

क़यामत के बाद का जीवन ही असल जीवन है। वह न केवल रूहानी होगा, बल्कि जिसमानी भी होगा। हम वहाँ रूह एवं शरीर दोनों के साथ जिएँगे। इस दुनिया और उस दुनिया की तुलना करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "क़सम अल्लाह की, आख़िरत की तुलना में दुनिया की जिंदगी उसी तरह है, जैसा कि एक उंगली समुद्र में डालने के बाद उसमें जितना पानी आए।"(13)[1] यही सांसारिक जीवन की हकीकत है। केवल पानी की चंद बूंद।

(6) कोई व्यक्ति मुस्लिम किस तरह हो सकता है?

पूर्ण रूप से और विश्वास के साथ "ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह" का अर्थ समझते हुए उसे कहने के साथ ही कोई व्यक्ति मुसलमान हो जाता है। उसका अर्थ है, अल्लाह के अलावा कोई इबादत यौग्य नहीं है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के संदेश्वाहक हैं।

इस वाक्य के पहले खण्ड “अल्लाह के अलावा कोई इबादत योग्य नहीं है” कहने का अर्थ यह है कि केवल अल्लाह के सामने नतमस्तक होना जायज़ है। उसके अतिरिक्त अन्य किसी की पूजा-अर्चना नहीं करना चाहिए। अल्लाह की शक्ति और अधिकार में किसी को भी साझेदार अथवा समकक्ष नहीं मानना चाहिए। मुस्लिम बनने के लिए निम्न बातें भी ज़रूरी हैं:

- इस बात पर विश्वास रखना कि क़ुरआन सशब्द अल्लाह द्वारा अवतरित तथा उसी की वाणियों का संग्रह है।.

---

(1) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2858 और "मुसनद अहमद" हदीस सं. 17560।.

- इस बात पर विश्वास रखना कि अल्लाह ने जो कुछ भी क़ुरआन में घोषणा की है, उसके अनुसार क़यामत (हिसाब किताब, लेखाजोखा और निर्णय के अंतिम दिन) अवश्य कायम होगा।
- इस्लाम को अपने धर्म के रुप में स्वीकार करना।
- अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा न करना।

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है : "क्षमा याचना और प्रायश्चित करके अल्लाह की शरण में आने वाले अल्लाह को बहुत ही अधिक पसंद हैं। तुममें से कोई यदि बयाबान में यात्रा कर रहा हो, उसके पास एक ही सवारी का ऊँट हो, जिसपर उसके खाने-पीने का सारा सामान लदा हुआ हो, फिर वह सवारी अचानक गुम हो जाए, बहुत ही तलाश के बाद भी उसका कुछ पता न चले, यहाँ तक कि वह निराश होकर मौत की प्रतीक्षा में किसी पेड़ के नीचे आकर सो जाए, इतने में अचानक उसका ऊँट उसके सामने आ खड़ा हो, तो वह प्रसन्नता से अल्लाह का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कह दे कि "मैं तेरा रब हूँ और तू मेरा बन्दा है।" खुशी से ग़लती कर जाए। अल्लाह अपने भक्तों की तौबा और क्षमा याचना से इससे भी अधिक प्रसन्न होता है।"[1]

एक दीवार पर लिखा हुआ है: "अल्लाह ही पूजा योग्य है, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के संदेश्वाहक हैं।"

(1) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 6309,और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2747।

(7) क़ुरआन क्या है?

क़ुरआन अल्लाह की अंतिम किताब है। मुसलमानों की आस्थाओं का संग्रह है। उसमें मानव जीवन संबंधित सभी बिषयों, जैसे लेनदेन, आपसी व्यवहार, ज्ञान, सिद्धांत, इबादत, आचरण इत्यादि पर चर्चा की गई है। परन्तु इसका आधारभूत विषय अल्लाह और उसकी सृष्टि के बीच का संबंध है। साथ ही यह एक नियोजित समाज, उचित मानव आचरण, समान आर्थिक व्यवस्था की स्थापना का मार्गदर्शन और विस्तारित विधि-ज्ञान प्रदान करता है।

याद रहे कि क़ुरआन अल्लाह की ओर से अरबी भाषा में मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुआ है। इसलिए क़ुरआन का अनुवाद जिस भाषा में भी किया जाए, वह वास्तविक क़ुरआन नहीं है, बल्कि उसके अर्थ का अनुवाद ही है।

(8) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं?

मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) सऊदी अरब के मक्का शहर में 570 ई. में पैदा हुए। जन्म से पहले ही पिता और 6 वर्ष की आयु में माता का निधन हो गया। उनका पालन-पोषण उनके चचा ने किया। उनका संबंध क़ुरैश के एक प्रतिष्ठित कबीले से था। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे और जीवन के अंतिम समय तक इसी अवस्था में रहे। बड़े होने के बाद आप सत्यवादी, विश्वासी, ईमानदार, उदार, सच्चे और निष्कपट व्यक्ति के रूप में चर्चित हुए(1).। आप छोटे ही से धार्मिक प्रवृत्ति के मालिक थे। लेकिन उस समय के समाज में व्याप्त मूर्ति पूजा से घृणा करते थे।

जब आप सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की आयु चालीस वर्ष की हुई, तो आपको जिब्रील द्वारा अल्लाह का पहला संदेश प्राप्त हुआ। फिर यह संदेश आने का क्रम 23 वर्ष तक जारी रहा। इन संदेशों को एकत्रित रूप ही क़ुरआन है।

जैसे ही उन्होंने क़ुरआन सुनाना और सच्चाई का प्रचार करना शुरू किया और एकेश्वरवाद की ओर लोगों को बुलाना आरंभ किया, तो बहुलवादी लोग आपपर और आपके अनुयायियों के छोटे समूह से नाराज़ रहने लगे। अत्याचार और यातना दिन-प्रति दिन बढ़ती ही गई। यहीं तक नहीं, बल्कि

(1) "मुसनद अहमद" हदीस सं. 15078।

संदेश्वाहक मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद।

सन् 622 ई. में अल्लाह ने उन लोगों को देश त्याग कर अन्य स्थान चले जाने का आदेश दिया। उसी आदेश के अनुसार पैग़म्बर मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्ल्म मक्का छोड़कर 260 मील उत्तर में स्थित मदीना शहर की ओर प्रस्थान कर गए। इसी ऐतिहासिक घटना से इस्लामिक कैलेंडर की शुरुआत हुई।

कुछ वर्षों के बाद मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके अनुयायियों ने मक्का को विजय कर लिया और अपने शत्रुओं को क्षमा कर दिया।

63 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। उस समय अरब उपमहाद्वीप का अधिकांश भाग मुसलमान हो चुका था। उनकी मृत्यु के बाद एक शताब्दी के अन्दर इस्लाम पश्चिम में स्पेन और पूर्व में चीन तक फैल चुका था। इस क़दर जल्दी और शान्तिपूर्वक विस्तार का कारण इस्लाम की सत्यता और उसकी शिक्षाओं की स्पष्टता है। इस्लाम केवल एक मात्र अल्लाह पर आस्था का आह्वान करता है।

संदेश्वाहक मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम मानवता के लिए आदर्श और उदाहरण थे। इमान्दार, न्यायप्रेमी, दयालु, सत्यवादी और बहादुर थे। सामाजिक कुसंस्कार, भ्रष्टाचार, लोभ एवं बुराई जैसी चीज़ें उनके अंदर रत्ती बराबर भी नहीं थीं। उनका एक ही प्रयास था कि अल्लाह का आज्ञापालन करते हुए मरने के बाद के जीवन में अल्लाह की ओर से मिलने वाला पुरस्कार प्राप्त किया जाए, जो कि मानव जीवन का बुनियादी उद्देश्य है। आप अपने तमाम कामों और व्यवहार में सदा अल्लाह को याद रखते थे।

संदेश्वाहक मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www.islam-guide.com/muhammad

(9) इस्लाम के प्रसार का विज्ञान के विकास पर कैसा असर पड़ा?

इस्लाम मानव को अपनी बुद्धि और अवलोकन शक्ति प्रयोग करने का आह्वान करता है। इस्लाम के विस्तार के कुछ ही वर्षों के भीतर महान सभ्यताएँ और विश्वविद्यालय पनपने लगे। पूर्वी और पशिचिमी तथा पुराने एवं नए विचारों और ज्ञान के संगम से चिकित्सा, गणित, भौतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, भुगोल, वस्तु कला, कला, साहित्य और इतिहास के क्षेत्रों में काफी प्रगति कर हुई। मध्य काल में मुस्लिम जगत से बहुत-सी मूलभूत प्रणालियाँ, जैसे अलजेब्रा , अरबी अंक और शून्य की धारणा (जो कि गणित के विकास में बहुत ही उपयोगी है) आदि यूरोप पहुँचीं। मुसलमानों Astrolabe, Quadrant, और नेविगेशनल नक्शे आदि बहुत-से ऐसे उन्नत उपकरण विकसित किए, जो यूरोप को खोज पर आधारित समुद्रीय यात्रा करने हेतु सक्षम बना गए।

Astrolabe मुसलमानों द्वारा विकसित महत्पूर्ण वैज्ञानिक यंत्र है, जो आधुनिक युग तक पशिचिम में व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता रहा है।

मुस्लिम चिकित्सकों ने सर्जरी पर भी ध्यान दिया एवं उसके लिए कई महत्पूर्ण उपकरण विकसित किए, इस प्राचीन पांडुलिपि में उपकरणों का रूप देखा जा सकता है।

(10) ईसा (अलैहिस्सालाम) के बारे में मुसलमानों की आस्था

मुसलमानों के नजदीक ईसा (अलैहिस्सालास) का स्थान बहुत ही महत्पूर्ण एवं सम्मानीय है। वे उनसे प्यार और मुहब्बत करते हैं और उनको अल्लाह द्वारा मानव जाति के लिए भेजे गए महान संदेशवाहकों में से एक समझते हैं। वह बिना बाप के पैदा हुए थे, क़ुरआन इस बात की पुष्टि करता है। क़ुरआन का एक अध्याय उनकी माता मरयम के नाम से है। ईसा (अलैहिस्सलाम) की पैदाइश का वर्णन क़ुरआन में इस तरह हुआ है।:

﴾जब फरिश्तों ने कहा, हे मरयम तुझे अल्लाह (तआला) अपने एक शब्द (ईसा) की शुभ सूचना देता है कि जिसका नाम मसीह पुत्र मरयम हैं, जो लोक तथा परलोग में सम्मानित हैं, और वह मेरे निकटवर्तियों में से हैं। वह लोगों से गोद में बात करेंगे और अधेड़ आयु में भी, और वह सदाचारियों में से होंगे। कहने लगीं प्रभु! मुझे पुत्र कैसे होगा? जबकि मुझे किसी पुरूष ने स्पर्श भी नहीं किया है? फ़रिश्ते ने कहा कि ईसी प्रकार, अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। जब वह किसी को पैदा करने का फैसला करता है, तो केवल कहता है कि "हो जा " और वह हो जाता है।﴿ (कुरआन, 3:45-47)

ईसा अल्लाह द्वारा चमत्कारिक रूप से आदम अलैहिस्सलाम की तरह बिना पिता के पैदा हुए थे। महान अल्लाह का कथन है:

﴾अल्लाह के निकट ईसा की दशा यथावत आदम के सामान है, जिसे मिट्टी से पैदा करके कहा कि हो जा, बस वह हो गया।﴿ (कुरआन , 3:59)

पैग़म्बरी काल में ईसा (अलैहिस्सलाम) ने बहुत सारे चमत्कार प्रदर्शित किए। जैसा कि

अल्लाह का फ़रमान है कहा कि ईसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा है :

﴾मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानियाँ लाया हूँ। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी के रूप का आकार बनाता हूँ। फिर उसमें फूँक मारता हूँ, तो वह अल्लाह के आदेश से पक्षी बन जाता है। और मैं अल्लाह के आदेश से जन्म से अंधे को और कोढ़ी

को स्वस्थ कर देता हूँ और मृतक को जीवित कर देता हूँ, और जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ तुम अपने घरों में जमा करते हो, मैं तुम्हें बता देता हूँ। इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है, यदि तुम ईमान वाले हो।》 (कुरआन , 3:49)

मुसलमानों की आस्था है कि ईसा को सूली पर नहीं लटकाया गया था। उनके शत्रुओं की योजना थी की उनको सूली पर लटकाकर उनकी हत्या कर दी जाए। लेकिन अल्लाह ने उनकी हिफ़ाज़त की और उनके शत्रुओं की योजना को विफल बना दिया। अल्लाह ने उनको जीवित ही आकाश पर उठा लिया और दुश्मनों को आज तक उनके दुष्कर्मों के भँवर में छोड़ दिया।

महान अल्लाह फरमाता है :

《और उन लोगों का यह कहना कि हमने अल्लाह के रसूल मसीह, मरयम के पुत्र ईसा, की हत्या कर दी, हालाँकि न तो उन्हें वध किया न उन्हें फाँसी दी, परन्तु उनके लिए समरूप बना दिया गया। विश्वास करो कि ईसा के विषय में मतभेद करने वाले लोग शंका में हैं। उन्हें इसकी कोई जानकारी नहीं सिवाय शक और शंका के। इतना निशिचत है कि उन्होंने उनकी हत्या नहीं की।》(कुरआन, 4:157)

सारे संदेश्वहकों का मूलभूत सिद्धांत और शिक्षा एक ही थी। सबकी शिक्षा का सार यह है कि केवल एक अल्लाह को अपना माबूद स्वीकारते हुए उनकी आज्ञा का पालन करना। ईसा अलैहिस्सलाम या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसमें किसी प्रकार के परिवर्तन लेकर नहीं आए थे, बल्कि पहले के उपदेशों के नवीकरण और पुष्टि करने आए थे।[1]

---

(1) मुसलमानों का ईमान है कि अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम पर इंजील उतारा है, जिसका कुछ हिस्सा आज भी न्यू टेस्टामेंट में उपलब्ध है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मुसलमान मौजूदा इंजील पर विश्वास रखते हैं, क्योंकि वह उस हाल में नहीं है, जिस हाल में ईसा अलैहिस्सलाम पर अवतरित हुआ था, बल्कि उसमें बहुत सारे रद्दवबदल, कमी व बेशी हो गई है। यही बात बाइबिल (The Holy Bible -revised standard version) के पुनरीक्षण के लिए गठित सभा ने भी कही है, जिसमें 32 विद्वान एवं विभिन्न धार्मिक संगठनों से 50 प्रतिनिधि शामिल थे। सभा ने किताब की प्रस्तावना में कहा कि इंजील में बहुत-सी हेराफेरी हो चुकी है एवं उसका कोई भी संस्करण संतोषजनक आकार नहीं रखता है। उन लोगों ने तमाम कॉपियों की तुलना के बाद केवल बेहतर फैसला लेने की कोशिश की है। कमिटी ने अधिक कहा है कि जो बड़ी तब्दीली, विभिन्नता, कमी व बेशी हुई है, उसकी तरफ हाशिए में इशारा कर दिया गया है। बाइबिल में फेरबदल के बारे में अधिक जानकारी के लिए क्लिक करें www.islam-guide.com/bible ।

यरूशलम में स्थित अक्सा मस्जिद।

ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें : www.islam-guide.com/jesus

(11) इस्लाम आतंकवाद के बारे में क्या कहता है?

इस्लाम दया एवं करुणा का धर्म है। इसमें आतंकवाद की कोई गुंजाइश नहीं है। महान अल्लाह ने क़ुरआन में कहा है :

﴾जिन लोगों ने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया तथा तुम्हें देश से नहीं निकाला उनके साथ उत्तम व्यवहार एवं उपकार करने तथा न्यायपूर्ण व्यवहार करने से अल्लाह तुम्हें नहीं रोकता। (अपितु) निःसंदेह अल्लाह तो न्याय करने वालों को पसंद करता है।﴿ (कुरआन , 60:8)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सैनिकों को स्त्रियों और बच्चों की हत्या से रोकते थे[1] । सैनिकों को सलाह देते थे कि वह "धोका न दें, अत्याचार न करें, नवजात शिशु की हत्या न करें।"[2]

उनका फ़रमान है : "वह व्यक्ति स्वर्ग की महक तक नहीं पा सकता है, हालाँकि उसकी महक चालीस साल की दूरी से पाई जा सकती है, जिसने किसी ऐसे इंसान की हत्या की, जिसकी मुसलमानों के साथ संधि है।"[3]

---

(1) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 3015 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं.1744।
(2) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं.1731 और "सुनन तिर्मिज़ी" हदीस सं. 1408।
(3) "सहीह बुखारी" हदीस सं. 3166 और "सुनन इब्न-ए-माजा" हदीस सं. 2686। .

इसके अलावा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आग में जलाकर सजा देने को भी वर्जित किया है।[1].

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हत्या को महा पापों में दूसरे नंबर का पाप कहा है[2] । उन्होंने वारनिंग दी है कि "न्याय के दिन सबसे पहले खून का हिसाब होगा।"[3]

यहाँ तक कि मुसलमानों को जानवरों के साथ भी अच्छा बरताव करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है : "एक महिला केवल इसलिए दण्डित हुई कि उसने बिल्ली को मरते समय तक बाँधे रखा। इस अपराध ने उसे महिला को नरक में पहुँचा दिया। बँधी हुई अवस्था में उसे न तो खाने-पीने को कुछ दिया और न छोड़ दिया कि वह शिकार करके खा सके।"[4]

उन्होंने यह भी कहा कि एक व्यक्ति केवल एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने के कारण स्वर्ग में प्रवेश किया। कुत्ते को बहुत प्यास लगी थी। उसने उसको पानी पिला दिया और अल्लाह उसके इस कर्म से खुश होकर उसको स्वर्ग प्रदान किया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों ने पूछा कि क्या हम को जानवरों के साथ उपकार करने पर भी पुण्य मिलेगा? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: "हर जानदार, पशु हो कि मानव, के साथ नरमी करने पर पुण्य मिलेगा।"[5]

उसके अलावा खाने के लिए भी यदि किसी जानवर का वध किया जाए, तो उसके साथ भी नरमी का आदेश दिया है, ताकि उनको कम से कम दुःख हो। उसके लिए छुरी को तेज़ और धारदार बना लेना चाहिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है कि "जब तुम किसी जीव का वध करो, तो उत्तम से उत्तम तरीक़ा अपनाओ, ताकि उसको कम से कम कष्ट हो, छुरी को तेज़ कर लिया करो।"[6]

इससे और इसके अलावा अन्य इस्लामी ने शिक्षाओं एवं निर्देशों से स्पष्ट होता है कि बेगुनाह जनमानुष को भयभीत करना और आतंकित करना तथा भवन एवं सम्पत्ति को क्षति पहुँचाना इस्लाम एवं मुसलमानों की दृष्टि से हराम एवं घृणित कार्य है। इस्लाम शान्ति, दया एवं क्षमा का धर्म है। अधिकांश मुसलमानों का उन आतंकित करने वाली गतिविधियों से कोई संबंध नहीं है, जिनमें कुछ मुसलमानों के संलिप्त होने की बात कही जाती है। यदि कोई मुसलान किसी आतंकवादी

---

(1) "सुनन अबू दाऊद" हदीस सं. 2675।.

(2) "सहीह बुखारी" हदीस सं. 6871 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 88।

(3) इसका है मतलब नाहक किसी को मारना या जख्मी करना। "सहीह बुखारी" हदीस सं. 6533 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 1678।

(4) "सहीह बुखारी" हदीस सं. 2365 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2422।

(5) इसकी व्याख्या पहले गुजर चुकी है। "सहीह बुखारी" हदीस सं. 2466 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2244।

(6) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 1955 और "सुनन तिर्मिज़ी" हदीस सं. 1409।

गतिविधि में संलिप्त होता भी है, तो वह स्वयं इस्लामी शिक्षाओं का उल्लंघनकारी है।

(12) इस्लाम में मानव अधिकार और न्याय

इस्लाम व्यक्ति को कई मानव अधिकार प्रदान करता है। उनमें से कुछ अधिकार निम्नलिखित हैं, जिनकी इस्लाम रक्षा करता है :

- इस्लामी राज्य में मुस्लिम और गैरमुस्लिम सबकी धन-संपत्ति सम्मानित और सुरक्षा योग्य है।

- इस्लाम नागरिकों की इज्ज़त और सम्मान की रक्षा को विशेष महत्व देता है। इसलिए किसी को गाली देना, अपमानित करना, खिल्ली उड़ाना इस्लाम में वर्जित किया गया है।

- इस्लाम में जातिवाद का कोई स्थान नहीं है। कुरआन मानवता का पाठ सिखाते हुए कहता है :

﴾हे लोगो! हमने तुम्हें एक (ही) पुरूष और एक ही स्त्री से जन्म दिया है, और विभिन्न तबकों एवं क़बीलों में बाँट दिया है, ताकि तुम आपस में एक-दूसरे को पहचान सको, अल्लाह की दृष्टि में तुम लोगों में वह सबसे अधिक सम्मानित है, जो सबसे अधिक अल्लाह से डरने वाला है। अल्लाह हर चीज को जानने वाला एवं हर चीज की ख़बर रखने वाला है।﴿ (कुरआन , 49:13)

धन-संपत्ति शक्ति-सम्मान और जाति वर्ग के आधार पर व्यक्ति और राष्ट्र के बीच विभेद और पक्षपात इस्लाम में अस्वीकार्य है। अल्लाह ने सब मानव को एक समान सृष्टि किया है। यदि उनके बीच कोई अंतर है, तो वह केवल आस्था, सत्कर्म और निष्ठा के आधार पर है। संदेशवाहक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है: "हे लोगो! तुम्हारा पालनहार एक है, और तुम सब एक ही बाप (आदम) की संतान हौ। न किसी अरबी को अजमी (गैर अरब) पर, न किसी अजमी को अरबी पर, न गोरे को काले पर न काले को गोरे पर[1] कोई श्रेष्ठता प्राप्त है। अल्लाह की दृष्टि में सबसे महान और श्रेष्ठ वह है, जो अल्लाह से सबसे अधिक डरता है।"[2]

---

(1) यहाँ रंग का उल्लेख उदहारण के तौर पर हुआ है, वरना इस्लाम में कोई भी रंग, रूप, वंश, तबका सम्मानीय नहीं है।

(2) "मुसनद अहमद" हदीस सं. 22978।

आज मानव जाति को जिन बड़ी समस्याओं का सामना है, उनमें से एक समस्या नस्लवाद है। विकसित राष्ट्र और देश मानव को चंद्रमा तक पहुँचाने में सफ़ल हैं। लेकिन मानवता के बीच नस्लवादी नफरत को नहीं रोक सकता। जातिवाद की इस प्रमुख समस्या को निर्मूल करने और जड़ से उखाड़ फेंकने का स्पष्ट उदहारण इस्लाम ने शुरू दिन से पेश किया है। मक्का का वार्षिक हज, जिसमें संसार भर से लगभग बीस लाख लोग उपस्थित होते हैं, नस्लवाद का अन्त करने एवं इस्लामी भाईचारा को कायम करने का अद्भुत नमूना प्रस्तुत करता है। इस्लाम न्याय का धर्म है। अल्लाह ने कहा है:

﴾अल्लाह (तआला) तुम्हें आदेश देता है कि अमानत धरोहर उनके मालिकों को पहुँचा दो। और जब लोगों के बीच फैसला करो तो न्याय के साथ फैसला करो।﴿ (क़ुरआन, 4:58)

आगे कहा है :

﴾न्याय करो, अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है।﴿ (क़ुरआन, 49:9)

अल्लाह ने हम को अपने शत्रु के साथ भी न्याय करने का आदेश दिया है:

﴾और किसी कौम की शत्रुता तुम्हें न्याय न करने पर तत्पर न करे। न्याय करो, वह ईशभय से अधिक निकट है।﴿ (कुरआन ,5:8)

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है : "लोगो! अन्याय से सावधान रहना[1]। अन्याय, न्याय के दिन के अंधेरों में से है।"[2]

जो लोग इस दुनिया में अपना हक (जिसके वह हकदार हैं) हासिल नहीं कर पाए, वह आखिरत में अपना हक हासिल करेंगे। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है : "न्याय के दिन हर व्यक्ति को उसका हक दिलवाया जाएगा।"[3]

(13) इस्लाम में महिलाओं का स्थान

इस्लाम विवाहित और अविवाहित दोनों तरह की महिलाओं को धन-संपत्ति अर्जन करने और खर्च करने का अधिकार एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में देता है। उनको खरीदने तथा बेचने, उपहार लेने तथा देने, दान करने और अपने धन को अपनी इच्छा के अनुसार खर्च करने का पूरा-पूरा अधिकार प्राप्त है। विवाह में दूल्हे से प्राप्त उपहार कपड़ा ,गहना, और महर का पैसा यह सब दुल्हन की अपनी संपत्ति है। विवाह के बाद दुल्हन को दूल्हे का नाम या उसके परिवार का नाम लेने की हरगिज़ आवश्यकता नहीं है।

महिला और पुरूष दोनों को सभ्य और शिष्ट कपड़ा हपन्ना इस्लामी अचार संहिता का एक अंग है। इस्लाम पति को अपनी पत्नी के इलाज तथा अपने जैसा ही खाना-पीना देने पर प्रोत्साहित करता है। साथ ही इस्लाम पति को अपनी पत्नी के साथ मधुर व्यवहार करने पर उभारता है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : "तुममें से सबसे बेहतर इंसान वह है, जो अपनी पत्नी के लिए सबसे बेहतर है।"[4]

इस्लाम में माता का स्थान बहुत ही ऊँचा है। उसके साथ अत्यधिक आदर, सम्मान और स्नेहपूर्ण व्यवहार करने का इस्लाम आह्वान करता है। एक व्यक्ति ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया: "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मेरे अच्छे व्यवहार

---

(1) जैसा कि दूसरे पर अत्याचार करना, अन्याय करना, किसी के साथ गलत करना तथा गलत कहना।

(2) "मुसनद अहमद" हदीस सं. 5798 और "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 2447।.

(3) "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2582 और "मुसनद अहमद" हदीस सं. 7163।

(4) "सुनन तिर्मिज़ी" हदीस सं. 3895 और "सुनन इब्न-ए-माजा" हदीस सं. 1978। .

का सबसे अधिक हक़दार कौन है"? आपने फरमाया "तुम्हारी माँ।" उसने कहा : "फिर कौन"? आपने फरमाया: "तुम्हारी माँ।" उसने कहा : "फिर कौन?" आपने फरमाया : "तुम्हारी माँ।" उसने कहा : "फिर कौन?" आपने फरमाया : "तुम्हारा बाप।"[1]

इस्लाम में महिलाओं के सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए देखें www.islam-guide.com/women

(14) इस्लाम में परिवार

परिवार मानव सभ्यता की मूल इकाई है, जो इस वक़्त बिखर रही है। इस्लाम पारिवारिक प्रणाली में पति, पत्नी, बच्चों और अन्य सम्बंधित रिश्तेदारों के बीच अधिकार का सुन्दर सामानता कायम करता है। इस ढाँचे में बेगरज व्यवहार, उदारता, और प्यार परवान चढ़ता है और एक अच्छी तरह से संगठित परिवार प्रणाली की स्थापना होती है, जिसमें सब एक-दूसरे के लिए निस्वार्थ भाव से काम करते हैं। इस्लाम की दृष्टि में एक शांतिपूर्ण, सुरक्षित और स्थिर परिवार का बहुत ही महत्व है। यह परिवार आध्यात्मिक विकास के लिए अति आवश्यक है। एक सामंजस्यपूर्ण परिवार में बच्चों की उपस्थिति से मधुर समाज की स्थापना होती है और यह उसके महत्व को बढ़ा देता है।

(15) इस्लाम में बुज़ुर्गों का स्थान

मुस्लिम जगत में बृद्धाश्रम बहुत ही कम देखने को मिलता है। मानव जीवन की इस कठिन उम्र में बृद्ध माता-पिता की सेवा में होने वाले कष्ट और असुविधा को इस्लाम में सम्मान और सौभाग्य के रूप में देखा जाता है और आध्यात्मिक विकास के लिए एक शुभ अवसर समझकर इसका स्वागत किया जाता है। इस्लाम में अपने माता-पिता के लिए केवल प्रार्थना ही काफी नहीं है। बचपन में हम असहाय होते हैं, उस समय माता-पिता अपने सुख को हमारे सुख के लिए कुर्बान कर देते हैं। इस बात को स्मरण करते हुए हमें उनकी सहनशील होकर सेवा करनी चाहिए। यह शिक्षा इस्लाम हमें देता है। इस्लाम में माता को उच्च स्थान दिया गया है। जब माता-पिता बृद्धावस्था में पहुँच जाते हैं, तो मुसलमान उनके साथ दयापूर्वक तथा निस्वार्थ भाव से व्यवहार करते हैं। इस्लाम में माता-पिता की सेवा करना संतान का कर्तव्य है और माता-पिता का अपनी संतान से ज्यादा ख्याल करना उनका अधिकार है। इस सेवा-कार्य में रत्ती बराबर भी कमी करना घृणित है।

---

(1) "सहीह अल-बुखारी" हदीस सं. 5971 और "सहीह मुस्लिम" हदीस सं. 2548।

अल्लाह माहन का कथन है :

﴾तथा तेरा प्रभु तुझे खुला आदेश दे चुका है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी अन्य की आराधना नें करना, तथा अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना। यदि उनमें से एक अथवा वह दोनों बृद्धावस्था को पहुँच जाएँ, तो उनको "उफ़" तक न कहना, उन्हें न डाँटना, बल्कि उनके साथ सम्मान तथा आदर से बात करना, तथा विनम्रता एवं प्रेम के साथ उनके सामने सत्कार के हाथ फैलाए रखना तथा प्रार्थना करते रहना कि हे मेरे प्रभु! इनपर ऐसे ही दया करना, जैसा कि इन्होंने मेरे बाल्यकाल में मेरा पालन-पोषण किया है।﴿ (कुरआन , 17 :23 -24)

(16) इस्लाम के पाँच स्तंभ क्या हैं?

इस्लाम के पाँच स्तंभ एक मुस्लिम के जीवन की रूपरेखा और आस्था का प्रमाण हैं। यह पाँच स्तंभ हैं: इस बात की गावाही देना कि अल्लाह ही केवल भक्तियोग्य है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के संदेशवाहक हैं, नमाज़ पढ़ना, रमज़ान का रोज़ा रखना, ज़कात देना और क्षमता हो तो जीवन में एक बार हज करना।

(क) शहादा (गवाही)

यानी पूर्ण विश्वास के साथ "ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह" कहना। इसका अर्थ है, अल्लाह ही केवल भक्तियोग्य है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के संदेशवाहक हैं। इस आस्था प्रदर्शन का नाम "शहादा" है। इसका अर्थ समझते हुए जानबूझकर पूर्ण विश्वास के साथ पढ़ने के बाद ही इन्सान मुसलमान हो सकता है, क्योंकि यही इस्लाम की जड़ और महत्पूर्ण बुनियाद है। .

(ख) नमाज़

मुसलमान दिन रात में पाँच बार नमाज़ पढ़ते हैं। उसको पढ़ने में कुछ मिनट का समय लगता है। इस नमाज़ को अल्लाह और बंदे के बीच सीधा सम्पर्क कायम करने का माध्यम कहा जाता है। इस सम्बन्ध को स्थापित करने के लिए किसी तीसरे व्यक्ति की ज़रूरत नहीं है। नमाज़ में, एक व्यक्ति आंतरिक खुशी, शांति और सुख महसूस करता है और अल्लाह खुश होता है। पैगंबर मुहम्मद ने कहा है: "ऐ बिलाल! लोगों को

नमाज़ के लिए बुलाओ एवं हमें इसके द्वारा शांति पहुँचाओ।"[1] बिलाल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के एक साथी थे और उनका काम आजान देना था। वह नमाज़ के लिए बुलंद आवाज़ में आजान दिया करते थे।

नमाज़ का समय है : फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़िरब और इशा। एक मुसलमान खेत, आफिस, दुकान, कॉलेज, अस्पताल, फैक्ट्री, इत्यादि कहीं भी हो, नमाज़ पढ़ सकता है।

इस्लाम में प्रार्थना के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखिए www.islamguide.com/prayer[2]

(ग) ज़कात

संसार में जो कुछ भी है, सब अल्लाह का है। मानव उसका मालिक नहीं है। ज़कात के दो शाब्दिक अर्थ हैं :"बृद्धि" और "पाक करना"। ज़कात देने का मतलब है, अपनी निश्चित संपत्ती का एक निश्चित अंश निर्धारित वर्ग के गरीबों को देना। करीब 85 ग्राम या उससे अधिक सोना अथवा उसके मूल्य के बराबर चाँदी या पैसा एक वर्ष तक किसी के पास रहे तो 2.5% के दर से ज़कात देना पड़ता है। यह छोटा-सा अंश गरीबों, दुखियारों के लिए खर्च करने से हमारी सम्पत्तियों का शुद्धिकरण होता है। यह वृक्ष की डालियों को काटने की तरह है, जो विकास को संतुलित करता है और नई वृद्धि को प्रोत्साहित करता है। यह 2.5% अंश अनिवार्य है, लेकिन अगर कोई उससे अधिक देना चाहे तो दे सकता है, जो कि प्रशंसनीय काम है और उसको सदका या दान कहते हैं।

(घ) रमज़ान महीने का रोज़ा रखना

हर साल रमज़ान के महीने (जो चाँद के हिसाब से बारहवाँ महीना है) में मुसलमानों का प्रातःकाल से लेकर सूर्यास्त तक खाने-पीने और सम्भोग से रूके रहने का नाम रोज़ा है। रोज़ा स्वास्थ के लिए तो लाभदायक है ही, लेकिन उसका उद्देश्य रूहानी शुद्धिकरण है। छोटे ही समय के लिए सही, लेकिन इंसान को भूख की पीड़ा का अनुभव होता है, जो गरीबों के प्रति दया को जगा देता है, जो निर्धनता के कारण प्रायः

---

(1) "मुसनद अहमद" हदीस सं. 22578 और "सुनन अबू दाऊद" हदीस सं. 4985।.

(2) या "A Guide to Prayer in Islam" लेखक M.A.K. Saqib का अध्ययन करें। इस की कॉपी के लिए दिए गए वेबसाइट पर जाएँ।

भूखे रहने पर मजबूर होते हैं। इस तरह, गरीब और धनी के बीच बेहतर सम्बन्ध कायम होता है और सहयोग की भावना का विकास होता है। लेकिन रोज़ा का बुनियादी उद्देश्य आध्यात्मिक विकास ही है, जैसे कि यह बात पहले आ चुकी है।[1]

(ड़) मक्का का हज

हज हर उस मुसलमान पर जीवन में एक बार फ़र्ज़ है, जिसकी शारीरिक और आर्थिक स्थिति ठीक हो। हर साल बीसों लाख मुसलामन दुनिया के हर कोने से मक्का आते हैं। यह इस्लामी कैलेंडर के हिसाब से बारहवें महीने में होता है। सारे लोग साधारण और एक समान कपड़ा (एहराम) पहने होते हैं, जो कि मानव-मानव के बीच के भेदभाव और सांस्कृतिक दूरियों को ख़त्म कर देता है और इस तरह सब लोग अल्लाह के सामने बराबर खड़े हो जाते हैं।
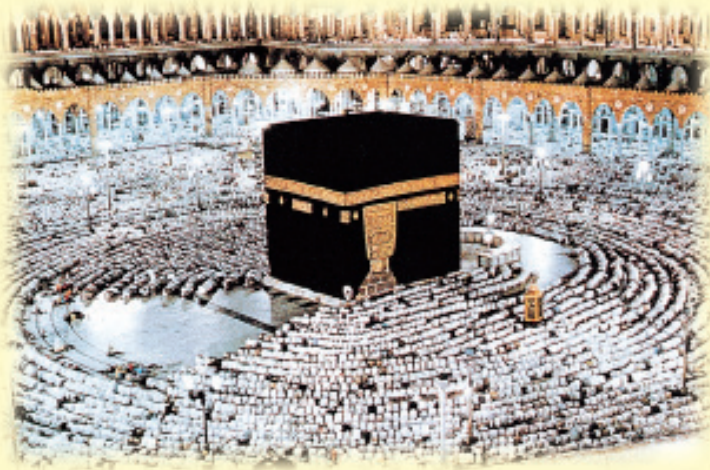
Pilgrims praying at the Haram mosque in Makkah. In this mosque is the Kaaba (the black building in the picture) which Muslims turn toward when praying. The Kaaba is the place of worship which God commanded the Prophets Abraham and his son, Ishmael, to build.

यह खाना-ए-काबा का चित्र है। काले रंग की इमारत को काबा कहा जाता है। लोग उसके आस-पास नमाज़ पढ़ रहे हैं। सारे संसार के मुसलमानों को उसी की ओर अपना चेहरा करके नमाज़ पढने का आदेश है। काबा को संदेशवाहक इब्राहीम और उनके पुत्र इस्माईल अलैहिमस्सलाम ने अल्लाह के आदेश से बनाया था।

(1) मक्का से 15 मील दूरी पर स्थित एक जगह।

हज में काबा का सात बार चक्कर लगाना पड़ता है। सफा मरवा पहाड़ियों के बीच भी सात बार चक्कर लगाना पड़ता है। उसके बाद अरफात के मैदान में उपस्थिति देनी पड़ती है, जहाँ पर पहुँचकर लोग अल्लाह का स्मरण करते हैं और क्षमा याचना के साथ-साथ अन्य कामनाएँ करते हैं। अरफ़ा के मैदान का यह जमघट न्याय के दिन की याद दिलाता है। हज के कार्य ईद अल-अज़हा की नमाज़ से संपन्न होते हैं। यह ईद तथा रमज़ान के बाद आने वाली ईद इस्लामी कैलेंडर की दो वार्षिक ईदें हैं।

(अधिक जानकारी के लिए www.islam-guide.com/pillars पर जाएँ।

अमेरिका में इस्लाम

अमेरिकी मुसलमानों के बारे में सामान्यीकरण करना मुश्किल है। वे

धर्मान्तरित लोगों, अप्रवासियों, कारखानों के कर्मचारियों,

डॉक्टरों और विभिन्न समुदायों से संबंध रखते हैं।

एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क के कारण वहाँ पर मस्जिदों की एक बड़ी संख्या भी है, जिसके कारण सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। उत्तरी अमेरिका में मुसलमान तेज़ी से बढ़े हैं। अठारहवीं शताब्दी तक उत्तरी अमेरिका में कुछ ही मुसलमान थे। अमेरिकियों की बड़ी संख्या ने इस्लाम में प्रवेश किया है और आज उनकी जन संख्या साढ़े पाँच लाख के लगभग है, जो शिक्षित, अमीर, गरीब और अनपढ़ आदि अलग-अलग वर्गों से हैं।(36)[1].

(1) *The World Almanac and Book of Facts 1996, Famighetti, page 644.*

इस्लाम के बारे में अधिक जानकारी के लिए

यदि आप इस्लाम के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, इस पुस्तक के बारे में किसी भी तरह की टिप्पणी करना चाहते हैं, कोई प्रश्न करना चाहेत हैं या किसी अन्य भाषा में इस किताब को पढ़ना चाहते हैं, तो इस पुस्तक के वेबसाइट पर जाए :

www.islam-guide.com

इस पुस्तक की कॉपी के लिए कृपया क्लिक करें :

www.islam-guide.com/copies

इसके अलावा आप निम्नलिखित संगठनों में से किसी एक से संपर्क कर सकते हैं :

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका

Islamic Assembly of North America
3588 Plymouth Road, Suite # 270, Ann Arbor, MI 48105, USA
Tel.: (734) 528-0006 - Fax: (734) 528-0066
E-mail: IANA@IANAnet.org

Islamic Foundation of America
PO Box: 3415, Merrifield, VA 22116, USA
Tel.: (703) 914-4982 - Fax: (703) 914-4984
E-mail: info@ifa.ws

Alharamain Islamic Foundation
1257 Siskiyou Blvd., no. 212, Ashland, OR 97520, USA
Tel.: (541) 482-1116 - Fax: (541) 482-1117
E-mail: haramain@alharamain.org

Islamic Information Institute of Dar-us-Salam
5301 Edgewood Rd., College Park, MD 20740-4623, USA
Tel.: (301) 982-9463 - Fax: (301) 982-9849
E-mail: iiid@islamworld.net

World Assembly of Muslim Youth
PO Box: 8096, Falls Church, VA 22041-8096, USA
Tel.: (703) 820-6656 - Fax: (703) 783-8409
E-mail: support@wamyusa.org

Al Jumuah Magazine
PO Box: 5387, Madison, WI 53705-5387, USA
Tel.: (608) 277-1855 - Fax: (608) 277-0323
E-mail: info@aljumuah.com

नोट: अपने निकटतम इस्लामी संगठनों के बारे जानने के लिए कृपया www.islam-guide.com/centers पर जाएँ।

(2) कनाडा

Islamic Information and Dawah Center International
1168 Bloor Street West, Toronto, Ontario M6H 1N1, Canada
Tel.: (416) 536-8433 - Fax: (416) 536-0417
E-mail: comments@islaminfo.com

(3) यूनाइटेड किंगडम

Al-Muntada Al-Islami Centre
7 Bridges Place, Parsons Green, London SW6 4HW, Britain
Tel.: 44 (0207) 736 9060 - Fax: 44 (0207) 736 4255
E-mail: muntada@almuntada-alislami.org
Jam'iat Ihyaa Minhaaj Al-Sunnah
PO Box: 24, Ipswich, Suffolk IP3 8ED, Britain
Tel. and Fax: 44 (01473) 251578
E-mail: mail@jimas.org

(4) सऊदी अरब

Alharamain Islamic Foundation
PO Box: 69606, Riyadh 11557, Saudi Arabia
Tel.: (966-1) 465-2210 - Fax: (966-1) 462-3306
E-mail: haramain@alharamain.org
World Assembly of Muslim Youth
PO Box: 10845, Riyadh 11443, KSA
Tel.: (966-1) 464-1669 - Fax: (966-1) 464-1710
E-mail: info@wamy.org

इस पुस्तक पर सुझाव और टिप्पणियों के लिए:

आप इस किताब पर किसी भी तरह की टिप्पणी करना चाहते हैं या सुझाव देना चाहते हैं, तो लेखक आई ए इब्राहीम को उनके इस पते पर भेजें:

ई-मेल : ib@i-g.org.
दूरभाष : (966-1) 454-1065, फैक्स: (966-1)
पी ओ बॉक्स : 21679, रियाज 11485, सऊदी अरब।

इसके अलावा यदि आप इस्लाम के बारे में अधिक जानकारी चाहते हैं या इस पुस्तक की अधिक कॉपी प्राप्त करना चाहते हैं, तो लेखक के पते पर संपर्क करें।

इस्लाम के बारे में अधिक पढ़ने के लिए:

The True Religion" लेखक : बिलाल अहमद
This is the Truth" हरमैन इस्लामी फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित।
Towards Understanding of Islam" लेखक : अबुल आला मौदूदी।
"*Life After Death*" विश्व मुस्लिम युवा सभा के द्वारा प्रकाशित।
डॉ. मुहम्मद अल-हिलाली और डॉ. मुहम्मद खान द्वारा लिखित अंग्रेजी में क़ुरआन शरीफ़ का अनुवाद और व्याख्या।
इन पुस्तकों या पम्फलेट के लिए कृपया क्लिक करें *: www.islam-guide.com/books*

संदर्भ

(1) Ahrens, C. Donald. 1988. "Metrology Today", 3rd. ed. St. paul: West Publishig Company.

(2) Anderson Ralph K. and others, 1978. "The Use of Satellite Pictures in Weather Analysis And forecasting", Geneva: Secraterial of the World Meteorologocal Organization.

(3) Anthes, Richard A.,John J. Cahir, Alistair B Fraser; and Hans A. Panofsky. 1981, "The Atmosphere", 3rd ed. Columbus: Charles E. Merrill Publishing Company.

(4) Barker, Kenneth; and others. 1985, The N/V study Bible, New International Version. Grand Rapits, Michigan: Zoondervan Publishing house.

(5) Bodin, Svante, 1978, "Weather And Climate", Poole, Dorest: Blandford Press Ltd.

(6) Cailleux, Andre. 1968, "Anatomy of the Earth", London: Word University Library.

(7) Couper, Heather; and Nigel Henbest. 1995, "The Space Atlas", London: Dorling Kinderley Limited.

(8) Davis, Richard A, Jr. 1972. "Principles of Oceanology". Don Mills, Ontario: Addison-Wesely Publishing Company.

(9) Douglas, J.D.; and Merrill C. Tenny. 1989. N/V Comat Dectionary of the Bible. Grand Rapids, Michigan: Zondervan Publishing House.

(10) Elder, Danny; and John Pernetta. 1991. Oceans. London: Mitchell Beazley Publishers.

(11) Famighetti Robert, 1996,"The World Almanac and Book of facts", Mahwa, New Jersey: World Almanac Books.

(12) Gross, M. Grant. 1993,"Oceanography, a View of Earth ", 6th ed. Englewood Cliffs: Prentice-Hall, Inc.

(13) Hickman, Cleveland P. and others. 1979,"Integrated Principles of Zoology ", 6th ed. St. Louis: The C.V. Mosby Company.

(14) Al-hilali, Muhammad T. and Muhammad A. Khan. 1994. Interpretation of the Meanings of the Noble Quran in the Englisk Language. 4th revised ed. Riyadh: Maktaba Dar-us-Salam.

(15) "The Holy Bible, Containing the Old and New Testaments (Revised Standard Version)" 1971. New York; William Collins Sons & Ltd.

(16) Ibn Hesham, Abdul-Malek. “Al-Seerah Al-Nabaweyyah”. Beirut: Dar Al-Marefa.

(17) The Islamic Affairs Department, The Embassy of Saudi Arabia, Washington. DC. 1989. "Understanding Islam and the Muslims "।

(18) Kuenen, H. 1960. "Marine Geology". New York: John Wiley and Sons. Inc.

(19) Leeson, C.R. and T.S. Leeson. 1981, "Histology", 4th ed. Philadelphia: W.B. Saunders Company.

(20) Ludlam, F.H. 1980, "Cloud and storms" London: The Pennsylvania State University Press.

(21) Makky. Ahmad and Others. 1993,"Ee’jaz al Qur’an al-Kareem fee Wasf Anwa’ al-Riyah, al-Sohob, al-Matar". Makkah: Commision of Scientific Signs of the Qura’n amd Sunnah.

(22) Miller, Albert and jack C. Thompson. 1975. "Elements of Meteorology". 2nd ed. Columbus: Charles E. Merrill Publishing company.

(23) Moore, Kieth L. E. Marshall Johnson; T.V.N. Persaud; Gerald C. Goeringer; Abdul Majeed A. Zindani and Mustafa A. Ahmed. 1992, "Human Develop as Described in the Qura’n and Sunnah.” Makkah: Commision on Scientific Signs of Qura’n and Suuah.

(24) Moore, Kieth L.; A.A. Zindani; and Others. 1987. Al-Ejaaz al-Elmy fee al-Naseyah (The Scientific Miracles in the front of the Head) Makkah: Commision on Scientific Signs of Qura’n and Suuah.

(25) Moore, Keith L. 1983. "The Developing Human Clinically Oriented Embryology, With Islamic Additions" 3rd ed. Jeddah: Dar Al-Qiblah.

(26) Moore, Keith L. and T.V.N. Persaud. 1993. "The Developing Human, Clinically Oriented Embryology", 5th ed. PhiladelPhia: W.B. Saunders Cpmpany.

(27) El-Naggar, Z.R. 1991. "The Geological Concept of Mountain in the Qura'n" 1st ed. Herndon: International institute of Islamic Thought.

(28) Neufeldt, V. 1994. Webster's New Word Dictionary. 3rd. College Edition. New York: Prentice Hall.

(29) "The New Encyclopaedia Britanica". 1981. 15th ed. Chicago: Encyclopaedia Britanica, Inc.

(30) Noback, Charles R.N.L. Strominger and R.J. Demarest. 1991. "The Human Nervous System, Introduction and Review" 4th ed. Philadelphia: Lea & Febiger.

(31) Ostrogorsky, George. 1969. "History of the German by Joan Hussey. Revised ed. New Brunswick: Rutgers University Press.

(32) Press, Frank and Raymond Siever, 1982. "Earth" 3rd ed. San Francisco: W.H.Freeman and Company.

(33) Ross, W.D. and oThers. 1963, "The Works of Aristotle" Translated into English : Metereologica. Vol. 3. London: Oxford Univetsity Press.

(34) Scorer, Richard and Harry Wexler. 1963. "A Colour Guide to Clouds" Robert Maxwell.

(35) Seeds, Michael A. 1981. "Horizons, Exploring the Universe", Belmont: Wadsworth Publishing House.

(36) Seeley, Rod R. Trent D. Stephens and Philip Tate. 1996. "Assentials of Anatomy and Physiology" 2nd ed. St. Louis: Mosby year Book, Inc.

(37) Sykes, Percy. 1963. "History of Persia" 3rd ed. London: Macmillan & CO Ltd.

(38) Tarbuck, Edward J. and Frederick K. Lutgens. 1982. "Earth Sceince" 3rd ed. Columbus: Charles E. Merrill Publishing Company.

(39) Thurman, Harold V. 1988, "Introductory Oceonography" 5th ed. Columbus: Charles E. Merrill Publishing Company.

(40) Weinberg, Steven. 1984, "The First Three Minutes, a Mod-

ern View of the Origin of the UniVerse" 5th ed. New York Bantam Books.

(41) Al-Zarkashy, Badr Al-Deen. 1990. "Al-Burhan fee Uloom Al-Qura'n ", 1st ed. Beirut: Dar El-Marefah.

(42) Zindani, A.A. "This is the Truth " (Video tape), Makkah: Commision on the scientific Signs of the Qura'n and Sunnah.

(43) हदीसों की नंबरिंग :

इस पुस्तक में उल्लिखित हदीसों के नंबर निम्नलिखित किताबों पर आधारित हैं :

- सहीह मुस्लिम" मुहम्मद फ़ुआद अब्दुल बाक़ी की नंबरिंग के अनुसार।
- "सहीह अल-बुखारी" “फत्ह अल-बारी” की नंबरिंग के अनुसार।
- "अल-तिरमिज़ी" अहमद शाकिर की नंबरिंग के अनुसार।
- "मुसनद अहमद" “दार-अल-इहया अल-तुरास अल-अरबी”, बैरूत,
- की नंबरिंग के अनुसार।
- "मुवत्ता 'मालिक" मुवत्ता मालिक की नंबरिंग के अनुसार।
- "अबू दाऊद" मुहम्मद मुहिय्युद्दीन.अब्दुल हमीद की नंबरिंग के अनुसार।
- "इब्न-ए-माजा" मुहम्मद फुआद अब्दुल बाक़ी की नंबरिंग के अनुसार।
- "अल-दारमी" खालिद अल-सबा अल-आलामी और फव्वाज़ अहमद ज़मरली की नंबरिंग के अनुसार।